कमल संदेश
ikf{kd if=dk

संपादक

प्रभात झा, सांसद

कार्यकारी संपादक

डॉ. शिव शक्ति बक्सी

सहायक संपादक

संजीव कुमार सिन्हा

संपादक मंडल सदस्य

सत्यपाल

कला संपादक

धर्मेन्द्र कौशल
विकास सैनी

सदस्यता शुल्क

वार्षिक : 100/-
त्रि वार्षिक : 250/-

संपर्क

InL;rk : +91(11) 23005798
Qku (dk-) : +91(11) 23381428
QDI : +91(11) 23387887
पता : डॉ. मुकर्जी स्मृति न्यास, पी.पी–66, सुब्रमण्यम भारती मार्ग, नई दिल्ली–110003

ई–मेल

kamalsandesh@yahoo.co.in

प्रकाशक एवं मुद्रक : डॉ. नन्दकिशोर गर्ग द्वारा डॉ. मुकर्जी स्मृति न्यास, के लिए एक्सेलप्रिंट, सी–36, एफ.एफ. कॉम्पलेक्स, झण्डेवालान, नई दिल्ली–55 से मुद्रित करा के, डॉ. मुकर्जी स्मृति न्यास, पी.पी–66, सुब्रमण्यम भारती मार्ग, नई दिल्ली–110003 से प्रकाशित किया गया। सम्पादक – प्रभात झा

विषय–सूची

आवरण कथा

विकास की राजनीति की विजय
डा. शिव शक्ति बक्सी 6

इस जीत के निहितार्थ
– संजीव कुमार सिन्हा 11

भाजपा अध्यक्ष का प्रवास

केरल 13
तमिलनाडु 15
छत्तीसगढ़ 16

लेख

अटलजी– एक विराट व्यक्तित्व
– अरुण जेटली 20

प्रधानमंत्री मोदी ने भारत के दीर्घकालीन मित्र रूस का दिया साथ
– विकाश आनंद 21

अटलजी का प्रथम अध्यक्षीय भाषण

अंधेरा छंटेगा, सूरज निकलेगा, कमल खिलेगा 27

अन्य

मन की बात 24
पुस्तक विमोचन : 'हमारे अटलजी' 30

कमल संदेश के सभी सुधी पाठकों को

क्रिसमस पर्व एवं नव वर्ष 2015

की हार्दिक शुभकामनाएं!

बोध कथा

'विपत्ति' से डरकर मत भागो

स्वामी रामकृष्ण परमहंस के निधन के बाद उनके शिष्य स्वामी विवेकानंद तीर्थयात्रा के लिए निकले। कई दिन तक दर्शन करते हुए वह काशी आए और विश्वनाथ के मंदिर में पहुंचे। दर्शन करके बाहर आए तो देखते हैं कि कुछ बंदर इधर से उधर चक्कर लगा रहे हैं। स्वामीजी जैसे ही आगे बढ़े कि बंदर उनके पीछे पड़ गए। उन दिनों स्वामीजी लंबा अंगरखा पहना करते थे और सिर पर साफा बांधते थे।

विद्या प्रेमी होने के कारण उनकी जेबें किताबों और कागजों से भरी रहती थीं। बंदरों को भ्रम हुआ कि उनकी जेबों में खाने की चीजें हैं। अपने पीछे बंदरों को आते देखकर स्वामीजी डर गए और तेज चलने लगे। बंदर भी तेजी से पीछा करने लगे। स्वामीजी ने दौड़ना शुरू किया। बंदर भी दौड़ने लगे। स्वामीजी अब क्या करें? बंदर उन्हें छोड़ने को तैयार ही नहीं थे। स्वामीजी का बदन थर-थर कांपने लगा। वे पसीने से नहा गए। लोग तमाशा देख रहे थे, पर कोई भी उनकी सहायता नहीं कर रहा था। तभी एक ओर से बड़े जोर की आवाज आई- 'भागो मत!' ज्यों ही ये शब्द स्वामीजी के कानों में पड़े, उन्हें बोध हुआ कि विपत्ति से डरकर जब हम भागते हैं तो वह और तेजी से हमारा पीछा करती है। अगर हम हिम्मत से उसका सामना करें तो वह मुंह छिपाकर भाग जाती है।

फिर क्या था, स्वामीजी निर्भीकता से खड़े हो गए, बंदर भी खड़े हो गए। थोड़ी देर खड़े रहकर वे लौट गए। उस दिन से स्वामीजी के जीवन में नया मोड़ आ गया। उन्होंने समाज में जहां कहीं बुराई देखी उससे कतराए नहीं, हौसले से उसका मुकाबला किया।

संकलन : आर.डी. अग्रवाल 'प्रेमी'
(नवभारत टाइम्स)

पाथेय

हमारा आह्वान है तरुण भारत को, नवयुवकों को, जिन्हें बनना है नये जगत् का निर्माता-वे नवयुवक, जिनके मन-प्राण स्वतंत्र हैं, एक महत्तर आदर्श के लिए, एक पूर्ण सत्य और श्रम को स्वीकारने के लिये। वे ऐसे हों जिनका जीवन भूत और वर्तमान के लिए नहीं, अपितु भविष्य के लिए समर्पित हो। उन्हें अपना जीवन उत्सर्ग करना पड़ेगा अपनी निम्न प्रकृति को उन्नत करने में। उन्हें अपना जीवन निवेदित करना होगा अपने में और सारी मनुष्य जाति में भगवान का साक्षात्कार करने के निमित्त। इसी को पूरी लगन व अथक परिश्रम से राष्ट्र और मानवता के लिए उन्हें साधना होगा।

- श्री अरविंद

कांग्रेस मुक्त भारत की ओर भाजपा के बढ़ते कदम

16 मई 2014 के बाद से भारत की राजनीति में जबर्दस्त बदलाव आया। जहां केन्द्र में भाजपा को नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में पूर्ण बहुमत मिला, वहीं महाराष्ट्र और हरियाणा में कांग्रेस की सरकार को हटाकर भाजपा की सरकार का आना स्वयं इस बात का संदेश देता है कि देश अब धीरे-धीरे भाजपा और नरेन्द्र मोदी के साथ आगे बढ़ने की दिशा में बढ़ रहा है। हाल ही में झारखंड में भाजपा की सरकार का बनना और जम्मू-कश्मीर में 25 सीटों पर भाजपा की जीत स्वयं यह जाहिर करती है कि देश प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के प्रति अपना अटूट विश्वास व्यक्त कर रहा है। चारों राज्यों महाराष्ट्र, हरियाणा, झारखंड और जम्मू-कश्मीर में कांग्रेस की जो गति हुई है, उससे दूसरी बात जाहिर हुई है कि राज्यों से भी देश की तरह से कांग्रेस की विदाई शुरू हो गई है।

झारखंड अपने गठन के बाद पूर्ण बहुमत के लिए तरस रहा था। भाजपा ने नारा दिया था ''स्पष्ट बहुमत का'' और जनता ने इसे स्वीकार किया। झारखंड के साथ ही छत्तीसगढ़ राज्य का गठन हुआ था, पर आज छत्तीसगढ़ जिस प्रगति के पादान पर है, वहां झारखंड नहीं पहुंच पाया। इसका मुख्य कारण है कि झारखंड में स्पष्ट बहुमत की सरकार पूर्व में कभी नहीं बनी। लेकिन इस बार मिथक टूटा और भाजपा को स्पष्ट बहुमत मिला।

झारखंड का भाग्योदय हुआ है। प्रगति के द्वार खुले हैं। अब भाजपा यह नहीं कह सकती कि हमें जनता ने स्पष्ट बहुमत नहीं दिया। भाजपा को अब राज्य में काम करना होगा। भाजपा झारखंड में सरकार में एक-बार नहीं तीन-तीन बार आई, पर गठबंधन के साथ आई। संगठन के तौर पर अकेले के दम पर भाजपा ने झारखंड में उतरने का निर्णय लिया। इसके बाद आजसू के साथ भाजपा मैदान में उतरी। भाजपा के संगठन को राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह ने कसने, संवारने और परिणामदायी बनाने की दिशा में कदम बढ़ाने के प्रयास शुरू किए।

झारखंड के बारे में इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि यहां पर स्थानीय दल का अपना महत्व है। ''झारखंड मुक्ति मोर्चा'' यहां की पुरानी पार्टी है और उसके ''गुरुजी'' के प्रति जो श्रद्धा थी उससे इनकार नहीं किया जा सकता।

यहां पर भाजपा और कांग्रेस में सीधी लड़ाई नहीं थी, बल्कि त्रिकोणीय संघर्ष था। इस त्रिकोणीय संघर्ष में जीत का रास्ता तय करना आसान नहीं था, लेकिन भारत के जनप्रिय नेता श्री नरेन्द्र मोदी और भाजपा की संगठन कौशल्यता के कारण भाजपा को झारखंड में स्पष्ट बहुमत मिला है।

अब बात करें जम्मू-कश्मीर की। यहां चतुष्कोणीय संघर्ष था। जम्मू में जहां भाजपा ने पूरी ताकत झोंक दी थी, वहीं इस बार उसे लग रहा था कि घाटी में भाजपा का खाता खुलेगा। प्रयास भी जोरों पर रहा। जम्मू-कश्मीर में जहां दो राष्ट्रीय दल लड़ रहे थे वहीं दो स्थानीय भी प्रभावी थे। जहां एनसी भी सत्ता में थी तो पूर्व में पीडीपी भी सत्ता में रही है। जिस तरह का जनादेश भाजपा को मिला है वह अब तक का रिकार्ड है। इससे पहले भाजपा को पूर्व में कभी भी इतनी सीटें नहीं मिली थीं। वहीं घाटी में भी जो मत भाजपा को मिला है, उससे यह बात भी उभर कर आयी है कि भाजपा की स्वीकार्यता धीरे-धीरे बढ़ रही है। भाजपा को भले ही घाटी में एक भी सीट नहीं मिली हो पर इस बार उसके प्रयत्न को कमोबेश स्वीकार्यता मिलने की दिशा में मत तो मिले हैं। जम्मू-कश्मीर में किसकी भी सरकार बनेगी यह तो एक-दो दिन में साफ होगी, पर भाजपा का जम्मू-कश्मीर में बढ़ता जनाधार देश के लोकप्रिय नेता नरेन्द्र मोदी की स्वीकार्यता को तो अवश्य दर्शाता है।

भारतीय जनता पार्टी देश में जीत हासिल करने के बाद लगातार राज्यों में जीत की ओर बढ़ रही है। भाजपा ने जो नारा दिया था ''कांग्रेस मुक्त भारत'', उस दिशा में नरेन्द्र भाई और अमित शाह की जोड़ी निरंतर आगे बढ़ रही है। ■

आवरण कथा

विकास की राजनीति की विजय

डा. शिव शक्ति बक्सी

एक बार फिर से लोगों ने लोकतंत्र की ताकत दिखा दी है। वास्तव में सच्ची लोकतांत्रिक भावना में लोगों ने न केवल भारी संख्या में बल्कि एक बेहतर भविष्य के लिए मतदान किया। यह लोकतंत्र की विजय है, यह विकास की राजनीति की विजय है और यह सुशासन के लिए मतदान है। जो बात कुछ दिन पहले असंभव दिखाई पड़ती थी, आज वह वास्तविकता बन गई है- निराशा और हताशा के स्थान पर उम्मीद और महत्वाकांक्षा ने ले लिया है। लोगों ने परिवर्तन और एक बेहतर भविष्य के लिए मतदान किया है जिसमें सरकार लोगों के कल्याण के लिए कार्य करेगी तथा उसका विशिष्ट ध्यान समृद्धि और विकास के युग की तरफ रहेगा। लोग भाजपा में अपना विश्वास व्यक्त कर रहे हैं और वे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में अपना मतदान कर रहे हैं। एनडीए सरकार के नेतृत्व में भाजपा का पिछले छह महीनों के सुशासन ने इस विश्वास को और गहरा किया है जिससे लोगों ने केन्द्र में एनडीए पर अपना विश्वास व्यक्त किया था। महाराष्ट्र और हरियाणा के बाद लोगों ने भाजपा में अपने विश्वास को दोहराया है।

जैसे-जैसे झारखंड और जम्मू-कश्मीर के चुनाव परिणाम आने लगे, उससे स्पष्ट हो गया कि भाजपा को दोनों राज्यों में भारी समर्थन मिला है। झारखंड में भाजपा ने पूर्ण बहुमत हासिल किया तो वह पीडीपी के बाद जम्मू और कश्मीर में दूसरी सबसे बड़ी पार्टी उभर कर आई। यह सचमुच एक ऐतिहासिक जनादेश था। इससे पहले किसी भी पार्टी को झारखण्ड में बहुमत हासिल नहीं हुआ और इससे पहले भाजपा ने जम्मू और कश्मीर में कभी 25 सीटें नहीं जीती थीं। देश की राजनीति बदल रही है और यह अब जाति-पांति और क्षेत्रीय अनुमानों के आस-पास घूमती दिखाई नहीं देती। यह राजनीतिक दलों की विकास और योग्यता का निर्वाह करने की तरफ झुकती दिखाई पड़ती है। जनतंत्र के लिए यह शुभ संकेत है और देश के लिए भी सकारात्मक परिवर्तन है।

झारखंड

झारखंड राज्य कुशासन और भ्रष्टाचार के लिए बदनाम हो चुका था। यह राज्य, जो अपने खनन संसाधनों के रूप में भारत का सर्वसमृद्ध राज्य समझा जाता था, वह अपने गठनकाल से लेकर अब तक उतनी प्रगति नहीं कर पाया जितनी अपेक्षा थी। झारखंड राज्य को बिहार राज्य से 2000 में इस आशा में अलग कर बनाया गया था, ताकि इसका सर्वांगीण विकास हो सके। गठबंधन सरकारों की दिक्कतें यह रही कि इन्हें विभिन्न प्रकार के दबावों तथा ब्लैकमेल सहना पड़ता था और इन्हें समय-समय पर तरह-तरह के निहित स्वार्थों का सामना करना पड़ता था। कांग्रेस ने राज्य में अवसरवादिता और नकारात्मक राजनीति पर चलकर विधानसभा में कम संख्या होने पर भी सरकारें बनाई, मधु कोड़ा जैसों को मुख्यमंत्री बनाकर बड़े-बड़े घोटाले होने दिए, इसके कारण सभी विकास की परियोजनाएं रूक जाने से बड़ा नुकसान उठाना पड़ा। इसके परिणाम के कारण लोगों ने कांग्रेस और सहयोगी दलों को उनकी इस चुनाव में भयंकर रूप से पराजित किया।

यह सचमुच करिश्मा ही था कि लोगों ने पूर्ण बहुमत वाली सरकार

झारखंड
परिणाम स्थिति
81 निर्वाचन क्षेत्रों में से 81 की ज्ञात स्थिति

दल का नाम	विजयी	आगे	कुल
इंडियन नेशनल कांग्रेस	6	0	6
बहुजन समाज पार्टी	1	0	1
भारतीय जनता पार्टी	37	0	37
आजसु पार्टी	5	0	5
झारखण्ड मुक्ति मोर्चा	19	0	19
झारखण्ड विकास मोर्चा (प्रजातांत्रिक)	8	0	8
कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया (मार्क्सिस्ट-लेनिनिस्ट)(लिबरेशन)	1	0	1
जय भारत समानता पार्टी	1	0	1
झारखण्ड पार्टी	1	0	1
नवजवान संघर्ष मोर्चा	1	0	1
मार्क्सिस्ट कोऑर्डिनेशन	1	0	1
कुल	**81**	**0**	**81**

बनाई। इसका मुख्य कारण प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अपील थी जिसमें उन्होंने लोगों से पूर्ण बहुमत वाली सरकार चुनने

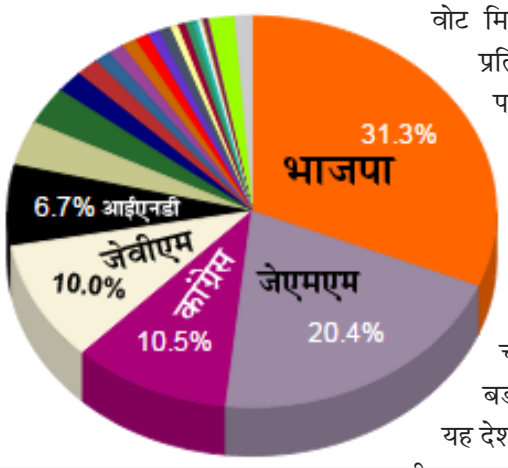

का आह्वान किया था। झारखंड में महीने भर चले चुनावों में लोगों ने बड़ी संख्या में भाग लिया। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और भाजपा अध्यक्ष श्री अमित शाह की रैलियां बहुत ही सफल रहीं। अधिकांश मतदान करने वालों ने पहले ही राज्य में भाजपा की पूर्ण बहुमत वाली सरकार बनने की घोषणा कर दी थी। इससे पहले कभी भी लोगों ने किसी राजनीतिक दल को पूर्ण बहुमत नहीं दिया था। सदा ही खंडित जनादेश मिलता रहा। सभी राजनीतिक गठबंधन इस सच को स्वीकार करने में सहमत थी कि सचमुच यह करिश्मा ही था। भाजपा और इसके सहयोगी दल आजसू को 42 सीटें प्राप्त हुई। झारखण्ड मुक्ति मोर्चा ने 19 सीटें जीतीं तो कांग्रेस को 6 ही सीटें मिल सकीं। आरजेडी (लालू प्रसाद यादव), जिसने पहले 5 सीटें जीतीं थी, वह तो पूरी तरह खत्म ही हो गई। जेवीएम (पी) ने आठ सीटें जीतीं परन्तु इसके नेता पूर्व मुख्यमंत्री बाबूलाल मरांडी को दोनों सीटों से हार का सामना करना पड़ा। भाजपा अपने सहयोगी दल आजसू को लगभग 35 प्रतिशत (भाजपा को 31.2 प्रतिशत) वोट मिले तो इसके सबसे नजदीक झामुओ को 20 प्रतिशत वोट मिले और कांग्रेस को 10.5 प्रतिशत वोट पर संतोष करना पड़ा। वोट प्रतिशत में भी भाजपा और अन्य राजनीतिक पार्टियों के बीच बड़ा भारी अन्तर है।

झारखंड में लोग प्रगति और विकास के मार्ग पर चलना चाहते हैं। झारखंड में बड़ी भारी संभावनाएं थी और यह देश के अग्रणी राज्यों में उभरने की क्षमता रखती थी। लोग तथा विशेष रूप से युवा वर्ग संकीर्ण विचारों से हट कर विकास और सुशासन की नई आशा का अब संचार कर रहे हैं। अधिकांश क्षेत्रीय पार्टियां अपने-अपने क्षेत्रों में असफल रहीं क्योंकि लोग एक स्थिर सरकार चाहते थे जो राज्य में काम करके विकास के एजेण्डा पर चल सके। राज्य का जनादेश स्पष्ट रूप से विकास और स्थिरता था। अब नई सरकार के सामने चुनौती यह है कि राज्य में लोगों की अभिलाषाओं की पूर्ति के लिए तेजी से खोए अवसरों की पूर्ति करें।

जम्मू और कश्मीर

जम्मू व कश्मीर का देश की राजनीति में एक विशेष स्थान है। राज्य के लोगों द्वारा दिए गए जनादेश का विश्लेषण अन्तरराष्ट्रीय मीडिया तक में होता है। विश्व भी बड़ी उत्सुकता से राज्य की राजनैतिक प्रक्रिया पर दृष्टि रखता है। इस बार, लोगों ने अलगाववादियों तथा सीमा-पार विघटनकारी तत्वों को बड़ा कड़ा संदेश दिया है। अलगाववादियों द्वारा बहिष्कार के आह्वान का धता बता कर लोग बड़ी संख्या में अपना मतदान करने आए और अपने विचार व्यक्त करने में जरा भी संकोच नहीं किया। यह अलगाववादियों के लिए बड़ा संदेश था कि लोकतंत्र का कोई अन्य विकल्प नहीं है। लोगों में लोकतांत्रिक प्रक्रिया के लिए भारी सम्मान है और वे ऐसी सरकार चाहते हैं जो राज्य को शांति, समृद्धि और विकास के मार्ग पर ले जाए।

जैसे-जैसे जम्मू और कश्मीर में मतदान की गणना होती गई यह स्पष्ट हो गया कि भाजपा और पीडीपी के बीच कड़ा मुकाबला है। पहली बार, भाजपा राज्य में सबसे बड़ी दल के रूप में उभर कर आई है परन्तु अंततः इसे

जम्मू - कश्मीर
परिणाम स्थिति

87 निर्वाचन क्षेत्रों में से 87 की ज्ञात स्थिति

दल का नाम	विजयी	आगे	कुल
इंडियन नेशनल कांग्रेस	12	0	12
कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया (मार्क्सीसिस्ट)	1	0	1
भारतीय जनता पार्टी	25	0	25
जम्मू एण्ड कश्मीर नेशनल कॉंफ्रेंस	15	0	15
जम्मू एण्ड कश्मीर पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी	28	0	28
जम्मू एंड कश्मीर पीपुल्स डेमोक्रेटिक फ्रंट (सेक्युलर)	1	0	1
जम्मू एण्ड कश्मीर पीपुल्स कांफ्रेंस	2	0	2
निर्दलीय	3	0	3
कुल	**87**	**0**	**87**

25 सीटें मिलीं, जो पीडीपी की 28 संख्या से से मात्र 3 सीट कम रही। यह पहली बार है, भाजपा को राज्य में इतना भारी समर्थन मिला। नेशनल कांफ्रेंस, जो सरकार में थी, वह 15 सीट तक रह गई, जबकि कांग्रेस को 12 सीटें ही मिली। भाजपा को पिछली बार 11 सीटें मिली थीं जो अब तक का इसका सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन है। इस बार, प्रधानमंत्री

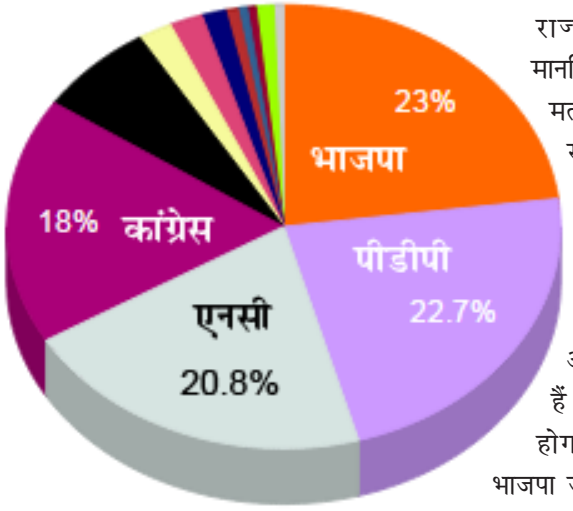

श्री नरेन्द्र मोदी के आह्वान पर सीटों की संख्या बढ़ कर दुगुनी से भी अधिक हो गई। भाजपा राज्य में 23 प्रतिशत वोट के साथ सबसे बड़ी पार्टी बन गई है जबकि पीडीपी को 22.7 प्रतिशत वोट मिले। नेशनल कांफ्रेंस को 20.8 प्रतिशत मत मिले और कांग्रेस 18 प्रतिशत वोट ही पा सकी। राज्य में जनादेश खण्डित रहा, परन्तु भाजपा प्रतिशत वोट में सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी और इस प्रकार सीटों के मामले में वह राज्य में दूसरी सबसे बड़ी पार्टी बनी। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने स्वयं ही चुनाव में बड़ी दिलचस्पी दिखाई और उन्होंने पूरे राज्य में चुनाव का प्रचार-प्रसार किया और सफलतापूर्वक रैलियों को सम्बोधित किया। जम्मू के अलावा, भाजपा ने घाटी और लद्दाख में अपनी विशेष उपस्थिति दर्ज की और ऐसी जगहों से चुनाव लड़ा जहां पहले भाजपा का पारम्परिक आधार नहीं रहा था। पूरे राज्य में भाजपा की स्वीकार्यता बढ़ती गई। भाजपा ने राज्य में अपनी ताकत हर तरफ दिखाया और ऐसा वातावरण तैयार किया जो राज्य में भाजपा की संगठनात्मक जड़ों को और गहरा कर सकता है।

राज्य में बदलती मानसिकता के कारण बढ़ते मतों के रूप में घाटी में सर्वश्रेष्ठ पार्टी के रूप में भाजपा के उभरते स्वरूप को देख कर लोग अब विकास और सुशासन के प्रति और अधिक जागरूक हैं। किसने यह सोचा होगा कि किसी दिन भाजपा जम्मू और कश्मीर में इतनी अधिक सीटें जीतेगी और वोट प्रतिशत के रूप में वह सबसे बड़ी पार्टी उभर कर आएगी। जिस प्रकार का नकारात्मक प्रचार-प्रसार भाजपा के विरूद्ध लगातार हुआ, वह भी भाजपा की गति को रोक नहीं पाया।

भाजपा निर्विघ्न रूप से बढ़ी क्योंकि वह सिद्धांतवादी राजनीति और सुशासन के प्रति वचनबद्ध थी।

विकास की राजनीति की विजय

राष्ट्र बढ़ती आकांक्षाओं एवं आशावादिता के युग में प्रवेश कर चुका है। यह बड़ी चुनौतियों के अवसरों से पूर्ण है। आज भारत एक युवा देश है और इन युवाओं के आंखों में स्वप्न भरे हुए हैं। वे बदलाव चाहते हैं, वे विकास देखना चाहते हैं और वे अवसरों की प्राप्ति की चाह में है। और इसके लिए नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में उनकी आशाएं बढ़ीं है। लोकसभा चुनावों के परिणाम इसका उदाहरण है, महाराष्ट्र और हरियाणा के परिणाम इस विश्वास को फिर से गहरा करते हैं तथा अब झारखंड और जम्मू तथा कश्मीर में वही भावना गूंज रही है जो पूरे राष्ट्र में गूंजती रही है। नरेन्द्र मोदी लोगों की आकांक्षा और उनकी भविष्य की आशा के द्योतक बन गए हैं। लोग कुशासन, भ्रष्टाचार, घोटालों और कुनबापरस्ती के खिलाफ वोट कर रहे हैं और वे विकास, दूरदृष्टि और प्रतिबद्धता निभाने के प्रति वोट दे रहे हैं। नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में वे निश्चित विश्वास लगातार प्रकट कर अपने सपनों को साकार करना चाहते हैं।

2014 में लोकतंत्र और लोगों की ताकत दिखाई पड़ती है जो चुपके से बड़ा बदलाव ला सकती है। लोगों को हर चीज ठीक करने की चाहत है और वे अब बड़े सपने पूरा करना चाहते हैं। लोकसभा चुनावों से लेकर राज्यों के चुनावों तक लोगों ने अपनी ताकत दिखा दी है और उन्होंने सकारात्मक राजनीति का संदेश दिया है। कभी 'राजनीति' शब्द की शुरुआत गलत अर्थों से की जाती थी जिसे अब लोग सही परिप्रेक्ष्य में रखना चाहते हैं। सकारात्मक राजनीति काम कर सकती है और बड़े बदलाव ला सकती है- यह बात पुनः स्थापित हो रही है क्योंकि नरेन्द्र मोदी अपनी अथक ऊर्जा और विज़न से काम करके विकास के इस युग को सकारात्मकता से जोड़ते जा रहे हैं।

झारखंड और जम्मू और कश्मीर के लोगों ने केन्द्र में भाजपा सरकार के जबर्दस्त प्रदर्शन को देखकर नरेन्द्र मोदी के हाथों को और मजबूत बनाया है। ■

संपादकीय टिप्पणी

झारखंड एवं जम्मू-कश्मीर में भाजपा की जीत को हिंदी के समाचार-पत्रों ने अपनी संपादकीय टिप्पणियों में ऐतिहासिक एवं महत्त्वपूर्ण बताया है। संपादकीय टिप्पणियों में कहा गया है कि झारखंड में अब स्थिरता कायम होगी तो जम्मू-कश्मीर में राष्ट्रीय एकता प्रबल होगी। हम यहां उनके प्रमुख अंश प्रकाशित कर रहे हैं :

हिंदुस्तान

झारखंड के लिए यह अच्छा है कि वहां भाजपा की सरकार बनेगी और इसके लिए उसे जोड़-तोड़ नहीं करनी पड़ेगी। उम्मीद है कि यह सरकार झारखंड को अस्थिरता के दौर से बाहर निकालेगी।

जनसत्ता

जम्मू-कश्मीर और झारखंड दोनों राज्यों के विधानसभा चुनावों में भाजपा को अपूर्व सफलता मिली है। झारखंड में वह सरकार बनाने की स्थिति में आ गई और जम्मू-कश्मीर की त्रिशंकु विधानसभा में दूसरा स्थान हासिल कर निर्णायक भूमिका में।

नेशनल दुनिया

झारखंड और जम्मू-कश्मीर के चुनाव नतीजों ने जता दिया है कि नरेन्द्र मोदी का जादू बरकरार है। वहीं केन्द्र की सत्ता खोने के बाद एक-एक कर राज्यों से भी रुखसत होती जा रही कांग्रेस के लिए फिर कड़वा सबक आया है।

पंजाब केसरी

झारखंड और जम्मू-कश्मीर विधानसभा के चुनाव परिणामों का पहला संदेश यह है कि केन्द्र में सत्तारूढ़ भारतीय जनता पार्टी पूरे भारत की राष्ट्रीय पार्टी बन चुकी है और कांग्रेस पार्टी ने यह रुतबा खो दिया है। दूसरा संदेश यह है कि श्री नरेन्द्र मोदी की छवि सामाजिक दायरों से बाहर निकलकर राष्ट्रीय स्तर पर राजनीतिक महानायक की बन चुकी है और तीसरा सबसे महत्वपूर्ण संदेश यह है कि जम्मू-कश्मीर में खानदानी राज के दिन लद चुके हैं।

राष्ट्रीय सहारा

सबसे बड़ा चमत्कार तो जम्मू-कश्मीर में हुआ, जिस भाजपा को आज तक अपनी मौजूदगी दर्ज कराने के लिए संघर्ष करना पड़ता था वह अचानक यहां की सत्ता के लिए प्राणवायु सरीखी बन गई। भाजपा अध्यक्ष अमित शाह ने यहां '44 प्लस' की ऐसी राजनीतिक शिरनी बिखेरी कि चुनाव बॉयकॉट की पाकिस्तानी साजिश धरी की धरी रह गई और वोटरों के हुजूम बेखौफ अपने लोकतांत्रिक अधिकार का इस्तेमाल करने निकल पड़े।

राजस्थान पत्रिका

झारखंड के गठन के बाद चौदह सालों में पहली बार एक स्थिर सरकार के संकेत मिल रहे हैं तो जम्मू-कश्मीर में आतंकवाद की तमाम वारदातों के बाद जनता ने किसी को हराने की बजाय यही मायनों में लोकतंत्र को जिताने का बड़ा काम किया है। दोनों राज्यों के नतीजे जहां भाजपा के लिए संतोषजनक माने जा सकते हैं वहीं कांग्रेस के लिए एक और झटके से कम नहीं है।

दैनिक जागरण

भाजपा ने एक बार फिर चुनावी इतिहास रचा। इस बार झारखंड में और जम्मू-कश्मीर में। झारखंड में जहां पहली बार भाजपा के नेतृत्व वाले गठबंधन ने अपने दम पर बहुमत हासिल किया वहीं जम्मू-कश्मीर में वह आजादी के बाद दूसरे सबसे बड़े दल के रूप में उभरी। देश के एकमात्र मुस्लिम बहुल राज्य में भाजपा की यह कामयाबी मायने रखती है। इसलिए और भी अधिक, क्योंकि वोट प्रतिशत के हिसाब से वह पहले नंबर पर रही। झारखंड और जम्मू-कश्मीर में भाजपा के इस करिश्मे के लिए सबसे अधिक श्रेय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को ही जाता है।

नवभारत टाइम्स

जम्मू-कश्मीर और झारखंड विधानसभा चुनाव के नतीजों का एक राजनीतिक संदेश तो यह है कि मोदी का मैजिक अभी चल रहा है। जम्मू-कश्मीर में पार्टी का मिशन 44 प्लस पूरा नहीं हुआ लेकिन वहां उसे जितना कुछ हासिल हुआ है, वह भी कुछ कम नहीं है। बीजेपी ने वहां अपनी असरदार उपस्थिति जताई है और गवर्नमेंट बनाने में भी उसकी निर्णायक भूमिका होगी लेकिन इससे बड़ी बात यह है कि प्रधानमंत्री के जम्मू-कश्मीर दौरों और वहां के चुनाव को मिली हाइप से इस राज्य से देश का मानसिक अलगाव काफी कम हुआ है। ■

जीत पर नरेंद्र मोदी ने दी बधाई

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने झारखंड और जम्मू कश्मीर विधानसभा चुनाव में भाजपा के शानदार प्रदर्शन के लिए दोनों राज्यों के पार्टी कार्यकर्ताओं को बधाई दी है।

श्री मोदी ने ट्वीट किया, ''झारखंड और जम्मू कश्मीर के कार्यकर्ताओं को मेरी बधाई। ये परिणाम उनकी कड़ी मेहनत और निःस्वार्थ प्रतिबद्धता के कारण आए हैं।'' जम्मू कश्मीर के नतीजों के संदर्भ में उन्होंने कहा कि मतदान में रिकार्ड मतदाताओं का शिरकत करना लोकतंत्र में लोगों के विश्वास का द्योतक है। भाजपा में विश्वास जताने के लिए मैं तहे दिल से उनका धन्यवाद करता हूं। झारखंड के बारे में प्रधानमंत्री ने कहा कि राज्य की जनता ने स्थिरता के पक्ष में मतदान किया है, जो प्रदेश की सही क्षमता को पाने के लिए आवश्यक है। मैं उन्हें बधाई देता हूं। ■

जनता ने भाजपा और प्रधानमंत्री के विकास की राजनीति का समर्थन किया : अमित शाह

जम्मू-कश्मीर और झारखंड विधानसभा के चुनावों में भारतीय जनता पार्टी को मिली सफलता के बाद पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह ने नयी दिल्ली स्थित पार्टी के मुख्य कार्यालय में प्रेस कांफ्रेस को संबोधित किया।

श्री शाह ने दोनों राज्यों में पार्टी को मिली अभूतपूर्व सफलता के लिए सबसे पहले भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ताओं को बधाई दी और उसके बाद वहां उपस्थित पार्टी के नेताओं को मिठाइयां खिलाकर बधाई दी।

श्री शाह ने कहा कि दोनों ही राज्यों में भारतीय जनता पार्टी का प्रदर्शन उम्मीद से बेहतर हुआ है। जनता ने भाजपा और प्रधानमंत्री के विकास की राजनीति का समर्थन किया है।

भाजपा अध्यक्ष श्री अमित शाह ने झारखंड व जम्मू-कश्मीर विधानसभा चुनाव में भाजपा के मिली सफलता का श्रेय पार्टी कार्यकर्ताओं को दिया। उन्होंने कहा है कि इस चुनाव के माध्यम से कांग्रेस मुक्त भारत बनाने की दिशा में सफलता मिली है।

श्री अमित शाह ने कहा है कि साल 2014 बीजेपी के लिए अप्रत्याशित सफलता का साल रहा है। मोदीजी के नेतृत्व में केंद्र में भाजपा सरकार आने के बाद जितने भी चुनाव हुए हैं, भाजपा ने सभी में जीत दर्ज की है। उन्होंने भाजपा की सफलता का सारा श्रेय प्रधानमंत्री श्री मोदी को दिया।

श्री शाह ने कहा कि झारखंड का विकास पूर्ण बहुमत की भाजपा सरकार ही कर सकती है। उन्होंने कहा कि झारखंड की जनता ने पहली बार स्पष्ट बहुमत दिया है। इसके अलावा कश्मीर में चुनाव नतीजों के बारे में उन्होंने कहा कि वहां भी भाजपा ने बेहतर प्रदर्शन किया है।

उन्होंने कहा कि पहली बार महाराष्ट्र में भाजपा का मुख्यमंत्री हुआ, हरियाणा में पार्टी चार से 50 सीटों पर पहुंची और सरकार बनी, अब झारखंड में भाजपा के नेतृत्व वाली पूर्ण जनादेश की सरकार बनने जा रही है. वहीं, जम्मू-कश्मीर में बड़े दल के रूप में पार्टी सामने आयी है। जम्मू-कश्मीर में पार्टी ने 25 सीटें हासिल की है।

उन्होंने कहा कि कांग्रेस मुक्त भारत का अभियान सफलता से आगे बढ़ रहा है। आने वाले दिनों में यह और आगे बढ़ेगा। उन्होंने कहा कि कांग्रेस और जनता परिवार ने चैलेंज खड़ा करने की कोशिश की, जिसे जनता ने खारिज कर दिया। उन्होंने कहा कि बिहार में कांग्रेस, जनता दल यू व राजद ने विकल्प बनने का सपना देखा, जिसे झारखंड की जनता ने तहत-नहस कर दिया।

श्री अमित शाह ने कहा कि दोनों राज्यों की जनता ने हम पर विश्वास जताया है। उन्होंने कहा कि मोदी के नेतृत्व में भाजपा सरकार चल रही है, जिसके कामकाज पर दोनों राज्यों की जनता ने मुहर लगायी है।

जनता परिवार ने झारखंड में भाजपा का विकल्प बनने की कोशिश की जिसे जनता ने नकार दिया तो वहीं जम्मू कश्मीर कांग्रेस मुक्त हो ही चुकी है। श्री शाह ने कांग्रेस को आड़े हाथ लेते हुए कहा कि भाजपा कांग्रेस मुक्त भारत की ओर बढ रही है।

श्री अमित शाह ने साथ ही कहा कि दोनों राज्यों के चुनावी नतीजे विकास का एजेंडा बदलने वालों के लिए सबक है। ■

इस जीत के निहितार्थ

– संजीव कुमार सिन्हा

'सबका साथ-सबका विकास' एवं 'कांग्रेस मुक्त भारत' के नारे के सहारे भाजपा निरंतर आगे बढ़ रही है। पहले लोकसभा चुनाव में भारी बहुमत। उसके बाद महाराष्ट्र-हरियाणा में शानदार प्रदर्शन। और अब झारखंड और जम्मू-कश्मीर में ऐतिहासिक जीत हासिल कर भाजपा ने इतिहास रच दिया है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के कुशल नेतृत्व और भाजपा अध्यक्ष श्री अमित शाह के बेहतर सांगठनिक कौशल की बदौलत भाजपा अपने विरोधी दलों को शिकस्त देते हुए नित नए कीर्तिमान बना रही है। पार्टी का विजय अभियान लगातार अग्रसर है। भाजपा और उसके सहयोगियों की अब 11 राज्यों में सरकारें हैं। भाजपा देश के आधे क्षेत्रफल और 40 प्रतिशत जनसंख्या पर शासन करनेवाली पार्टी बन गई है।

जितनी तेजी से भाजपा आगे बढ़ रही है, उससे दोगुनी रफ्तार से कांग्रेस नीचे आ रही है। कांग्रेस अध्यक्षा श्रीमती सोनिया गांधी और उपाध्यक्ष श्री राहुल गांधी पार्टी कार्यकर्ताओं में उत्साह नहीं जगा पा रहे और न ही देश की जनता में भरोसा जगा रहे, वहीं प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का 'सबका साथ-सबका विकास' एवं 'कांग्रेस मुक्त भारत' का नारा लोगों को आकर्षित कर रहा है। जम्मू-कश्मीर और झारखंड में पराजय के साथ ही कांग्रेस की हैट्रिक हार हुई। कांग्रेस को लोकसभा चुनाव के बाद लगातार चार राज्यों में सत्ता से बाहर होना पड़ा। विधानसभा चुनावों से पहले हरियाणा में कांग्रेस की सरकार थी, जबकि महाराष्ट्र, झारखंड और जम्मू-कश्मीर में वह गठबंधन सरकार में शामिल थी। पिछले 14 महीनों में कांग्रेस ने 12 राज्यों में चुनाव हारे हैं। एक के बाद एक हार से उसके हौसले पस्त है। देश भर में उसके खिलाफ माहौल है। यह पार्टी बिहार, उत्तर प्रदेश, ओडिशा, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश, गुजरात जैसे राज्यों में पूरी तरह अपनी जमीन खो चुकी है। आजादी के बाद पहली बार कांग्रेस देश के 10 प्रतिशत हिस्से में सिमट गई है।

प्रधानमंत्री श्री मोदी की लोकप्रियता और उनके द्वारा केंद्र में किए जा रहे दूरगामी निर्णयों का मतदाताओं पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा। भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह की सांगठनिक कुशलता एवं रणनीति ने इस सकारात्मक प्रभाव को अपने पक्ष में कर लिया। देश भर में श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में 'विकास' की लहर चल रही है। भाजपा ने चुनाव में 'विकास' को मुद्दा बनाया और जिसका पूरा फायदा उसे मिला।

झारखंड एवं जम्मू-कश्मीर के चुनाव परिणाम से यह स्पष्ट हो गया है कि भाजपा अब देश की नंबर एक पार्टी बन गई है। वह लगातार आगे बढ़ रही है तो कांग्रेस लगातार कमजोर होती जा रही है। और वामपंथी दल बस किसी तरह अपना वजूद बचाए हुए हैं। क्षेत्रीय दल आपसी कलह और वंशवाद की गिरफ्त में है।

दोनों ही राज्यों में पांच चरणों में मतदान प्रक्रिया संपन्न हुइ थी। इस बार दोनों ही राज्यों में रिकॉर्ड मतदान हुआ था। दोनों राज्यों में भाजपा ने अब तक का सबसे अच्छा प्रदर्शन किया। झारखंड में भाजपा गठबंधन को पूर्ण बहुमत मिला। जम्मू-कश्मीर में भी भाजपा दूसरी सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी। वोट प्रतिशत के लिहाज से भी भाजपा दोनों राज्यों में सबसे आगे रही, झारखंड में 23 प्रतिशत और कश्मीर में 31 प्रतिशत वोट मिले।

87 सदस्यीय जम्मू-कश्मीर विधानसभा के लिए हुए चुनाव में पीडीपी को 28 सीटें मिलीं। भाजपा को 25 और नेशनल कॉन्फ्रेंस को 2 निर्दलीय विधायकों सहित 17 सीटें मिलीं। जबकि कांग्रेस को 12 सीटों से संतोष करना पड़ा। जम्मू-कश्मीर में भाजपा का अब तक का सबसे शानदार प्रदर्शन है। 2008 के चुनाव की तुलना में उसके वोट-बैंक में 10 प्रतिशत का इजाफा हुआ। हालांकि पार्टी कश्मीर घाटी और लद्दाख क्षेत्र में अपेक्षित प्रदर्शन नहीं कर पाई। भाजपा ने अपनी सारी सीटें

जम्मू क्षेत्र से जीतीं। जम्मू क्षेत्र में 37 विधानसभा सीटें हैं। भाजपा ने जम्मू में अपना प्रदर्शन सुधारा। पिछली बार उसने 11 सीटें जीती थीं। इस बार उसे 14 सीटें ज्यादा यानी कुल 25 सीटें मिली हैं। क्षेत्र में भाजपा को 67 फीसदी कामयाबी मिली। कश्मीर में भाजपा को भले सीट नहीं मिली लेकिन जम्मू सहित पूरे राज्य में उसकी उपस्थिति कई मायनों में महत्त्वपूर्ण है। राज्य में राष्ट्रवादी विचारधारा के प्रबल होने से अलगाववादी संगठनों के हौसले पस्त होंगे और जम्मू-कश्मीर का विकास देश में बह रही विकास की बयार के संग होगा। इस बार जनता ने दलगत राजनीति से ऊपर उठकर वंशवाद और परिवारवाद को अलविदा कह दिया। राज्य में बड़े पैमाने पर नेताओं के रिश्तेदार, जो चुनाव में खड़े हुए थे, उनको मतदाताओं ने धूल चटा दिया।

झारखंड में मतदाताओं ने भाजपा के 'पूर्ण बहुमत-संपूर्ण विकास' के नारे में अपना भरोसा कायम करते हुए स्थिरता के लिए मतदान किया। भाजपा नीत गठबंधन को स्पष्ट बहुमत मिला। 81 सदस्यीय विधानसभा के लिए हुए चुनाव में भाजपा और आजसू को 42 सीटें मिलीं। भाजपा 73 सीटों पर लड़ी थी और 37 सीटें जीतने में कामयाब रही। जबकि सहयोगी दल आजसू आठ सीटों पर लड़ी और पांच सीटें मिलीं। 14 साल के इतिहास में झारखंड में स्पष्ट बहुमत वाली सरकार ही नहीं रही। राज्य को नौ मुख्यमंत्री मिले। एक निर्दलीय विधायक तक सीएम बना। करीब साढ़े 9 साल तक भाजपा के ही मुख्यमंत्री रहे लेकिन अन्य दलों के समर्थन से। भाजपा ने इस बार स्थिर सरकार का नारा दिया था, जिसमें लोगों ने भरोसा जताया।

झारखंड और जम्मू-कश्मीर दोनों ही राज्यों में श्री नरेंद्र मोदी की रैलियों में उमड़ती भीड़ ने पार्टी की जीत की ओर चुनाव-प्रचार के दौरान ही इशारा कर दिया था। मोदी जी की लोकप्रियता और उनके द्वारा केंद्र में किए जा रहे दूरगामी निर्णयों का मतदाताओं पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा। भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह की सांगठनिक कुशलता एवं रणनीति ने इस सकारात्मक प्रभाव को अपने पक्ष में कर लिया। देश भर में श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में 'विकास' की लहर चल रही है। भाजपा ने 'विकास' को मुद्दा बनाया और जिसका पूरा फायदा उसे मिला। ■

'पश्चिम बंगाल के अल्पसंख्यकों में भय'

भाजपा प्रतिनिधि मंडल ने केन्द्रीय अल्पसंख्यक राज्यमंत्री श्री मुख्तार अब्बास नकवी को पश्चिम बंगाल में अल्पसंख्यकों पर हो रहे अत्याचारों को लेकर 11 दिसंबर को एक ज्ञापन सौंपा। इस प्रतिनिधिमंडल में भाजपा के राष्ट्रीय सचिव सिद्धार्थ नाथ सिंह, शहरी विकास राज्य मंत्री बाबुल सुप्रिया, सांसद एस. एस. अहलुवालिया, सांसद चंदन मित्रा और पश्चिम बंगाल के भाजपा नेता शिशिर बजौरिया शामिल थे।

इस ज्ञापन में कहा गया है कि पश्चिम बंगाल में 16 जुलाई 2014 से अल्पसंख्यकों पर हमले तेज हो गए हैं। सत्ताधारी तृणमूल कांग्रेस के गुंडे खासकर उन अल्पसंख्यकों को निशाना बना रहे हैं, भाजपा में शामिल हो गए हैं और भाजपा के समर्थक हैं। पश्चिम बंगाल के अधिकांश जिले तृणमूल कांग्रेस के आतंक और भय से ग्रसित हैं।

मेदिनापुर, हुगली, बर्धमान, उत्तरी 24 परगना और बीरभूमि सर्वाधिक प्रभावित हैं, क्योंकि बहुत से गांव जो पहले तृणमूल कांग्रेस के समर्थक थे, अब भाजपा के समर्थक हो गए हैं। इनको लगातार धमकियां मिल रही हैं, जबदस्ती उगाही की जा रही है। ये अल्पसंख्यक अपनी सुरक्षा व बचाव के लिए भाजपा की ओर देख रहे हैं। ये लोग ममता बनर्जी के शासन काल के 'पोरिबर्तन' को तो कभी नहीं देखा, बल्कि मोदीजी के आह्वाहन 'सबका साथ, सबका विकास' से प्रभावित जरूर हैं।

पिछले पांच महीनों में बीरभूमि जिले के इलाम और पौरी पुलिस स्टेशन क्षेत्रों में भाजपा के 5 अल्पसंख्यक सदस्य मारे गए हैं।

27 अक्टूबर को पश्चिम बंगाल की पुलिस ने बीरभूमि के बहुत से गांवों में धारा 144 के तहत निषेधाज्ञा लागू कर दी और पांच लोगों से अधिक एक इकट्ठा होने पर प्रतिबंध लगा दिया।

30 नवंबर को हरिशपुर गांव के एस. के. अनरूल उस समय तृणमूल कांग्रेस के गुंडों की गोली से घायल हो गए, जब वे भाजपा अध्यक्ष अमित शाह की रैली में कोलकाता जाने की तैयारी कर रहे थे।

यहां खासतौर पर अल्पसंख्यकों का जीवन राज्य की सत्ताधारी तृणमूल कांग्रेस के कारण खतरे में है। इसलिए हम आपसे अनुरोध करते हैं कि आप वहां की वास्तविक स्थिति जानने के लिए अपने मंत्रालय की एक टीम को भेंजे। ■

भाजपा अध्यक्ष का प्रवास
कांग्रेस के कुशासन को खत्म करें : अमित शाह

केरल

भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह ने केरल के एर्नाकुलम में 20 दिसंबर को अपने केरल प्रवास के दौरान एक संवाददाता सम्मेलन को संबोधित किया। श्री शाह ने इस अवसर पर केरल के लोगों को अधिकाधिक संख्या में भाजपा से जुड़ने और राज्य में कांग्रेस व वाममोर्चा के कुशासन को खत्म करने का आग्रह किया।

श्री शाह ने कहा कि केरल की अर्थव्यवस्था संकट के दौर से गुजर रही है। कांग्रेस और वामदलों के कुशासन के चलते केरल आज कर्ज में डूबा है और बेरोजगारी चरम पर है।

श्री शाह ने कहा कि वर्ष 2000-01 में गुजरात की सालाना प्रति व्यक्ति आय 17,227 रुपये थी जबकि केरल की 19,809 रुपये थी। उस समय केरल की प्रति व्यक्ति आय गुजरात से 2,582 रुपये अधिक थी। लेकिन विगत वर्षों में गुजरात ने जहां तेज गति से प्रगति की वहीं केरल लगातार पीछे गया। यही वजह है कि वर्ष 2012-13 में गुजरात की प्रति व्यक्ति आय बढ़कर 61,220 रुपये हो गई जबकि केरल की प्रति व्यक्ति आय मात्र 56,115 रुपये रह गई। इस तरह आज गुजरात की प्रति व्यक्ति आय केरल के मुकाबले पांच हजार रुपये अधिक है।

श्री शाह ने कहा कि ग्यारहवीं पंचवर्षीय योजना में गुजरात की औसत वार्षिक विकास दर 9.34 प्रतिशत रही जबकि केरल की विकास दर मात्र 7.67 प्रतिशत थी।

श्री शाह ने कहा कि पश्चिम बंगाल की तरह केरल भी आज कर्ज में डूबा है। केरल में कर्ज का स्तर जीएसडीपी (सकल घरेलू राज्य उत्पाद) के 30 प्रतिशत के करीब है जो देश के बाकी राज्यों से काफी अधिक है।

श्री शाह ने कहा कि केरल के नौजवान रोजगार की तलाश में आज अपने गांव-घर को छोड़कर दूर जाने को मजबूर हैं। देश के बड़े राज्यों में सर्वाधिक बेरोजगारी दर केरल में है। जिस तरह कांग्रेस तथा तीसरे मोर्चा के सहयोगी दलों के शासन वाले राज्यों में बेरोजगारी अधिक है, वैसे ही केरल में भी बेरोजगारी दर काफी अधिक है। एनएसएसओ के अनुसार वर्ष 2011-12 में केरल में बेरोजगारी दर 9.8 प्रतिशत थी जबकि भाजपा शासित गुजरात में बेरोजगारी दर मात्र 0.7 प्रतिशत और मध्य प्रदेश में 1 प्रतिशत है जो देश न्यूनतम है।

श्री शाह ने कहा कि एनडीए सरकार ने अपने पहले ही बजट में केरल में आइआइटी की स्थापना की घोषणा की।

केरल के नौजवान रोजगार की तलाश में आज अपने गांव-घर को छोड़कर दूर जाने को मजबूर हैं। देश के बड़े राज्यों में सर्वाधिक बेरोजगारी दर केरल में है। जिस तरह कांग्रेस तथा तीसरे मोर्चा के सहयोगी दलों के शासन वाले राज्यों में बेरोजगारी अधिक है, वैसे ही केरल में भी बेरोजगारी दर काफी अधिक है।

श्री शाह ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में एनडीए सरकार ने इराक में फंसी केरल की नर्सों को सकुशल वहां से निकालकर केरल में उनके घर पहुंचाया। इसी तरह सरकार ने लीबिया में फंसी केरल की नर्सों को भी वहां से सुरक्षित निकालकर केरल पहुंचाने का काम किया।

श्री शाह ने कहा कि वाममोर्चा और कांग्रेस ने केरल में

अल्पसंख्यक तुष्टीकरण के नाम पर कट्टरपंथी तत्त्वों को बढ़ावा दिया है।

श्री शाह ने कहा कि लोक सभा चुनाव-2014 में आई 'मोदी सुनामी' से कांग्रेस पार्टी 19 राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों के चुनावी मानचित्र से गायब हो गई है। वामपंथी पार्टियों का वजूद भी भारत के चुनावी मानचित्र से विलुप्त होने के कगार पर है।

श्री शाह ने कहा कि लोक सभा चुनाव-2014 में भारतीय जनता पार्टी को केरल में 18 लाख 56 हजार 796 वोट मिले। राज्य में हर दसवें मतदाता ने भारतीय जनता पार्टी को वोट दिया। यह तथ्य इस बात को दिखाता है कि केरलवासी अब कांग्रेस और वाम मोर्चा के कुशासन से तंग आ चुके हैं। केरल की जनता बदलाव चाहती है।

श्री शाह ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी देश की सबसे बड़ी पार्टी है। लोक सभा चुनाव-2014 में केरल में भले ही भाजपा का खाता न खुला हो लेकिन मतसंख्या के आधार पर भाजपा राज्य की तीसरी सबसे बड़ी पार्टी है। भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी से भी अधिक वोट भाजपा को मिले हैं। लोक सभा चुनाव में भाजपा को जहां 10 प्रतिशत से अधिक मत मिले वहीं सीपीआइ को मात्र 7.6 प्रतिशत मत ही मिले।

एनडीए सरकार का ध्येय सबका साथ, सबका विकास है। एनडीए की जन कल्याणकारी नीतियों से ही बीते छह महीने में महंगाई में रिकार्ड गिरावट आई है।

श्री शाह ने कहा कि कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक पूरा भारत सुशासन और विकास के रंग में रंगने जा रहा है।

केंद्र सरकार की छह माह की उपलब्धियों का जिक्र करते हुए श्री शाह ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारतीय अर्थव्यावस्था सुस्ती के दौर (Slow down) से निकलकर उच्च विकास दर के पथ पर बढ़ रही है। वित्त वर्ष 2014-15 की पहली छमाही (अप्रैल-सितंबर) में सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) की वृद्धि दर बढ़कर 5.5 प्रतिशत हो गई है जबकि कांग्रेस के नेतृत्व वाली संप्रग सरकार के कार्यकाल में वित्त वर्ष 2013-14 की पहली छमाही में विकास दर मात्र 4.9 प्रतिशत थी।

श्री शाह ने कहा कि एनडीए सरकार का ध्येय सबका साथ, सबका विकास है। एनडीए की जन कल्याणकारी नीतियों से ही बीते छह महीने में महंगाई में रिकार्ड गिरावट आई है। थोक महंगाई दर पांच साल के न्यूनतम स्तर पर है। थोक मूल्य सूचकांक (WPI) पर आधारित मुद्रास्फीति नवंबर 2014 में घटकर जीरो पर आ गई है जबकि संप्रग शासन में नवंबर 2013 में यह 7.52 प्रतिशत और मई 2014 में 6.18 प्रतिशत थी। इसी तरह उपभोक्ता मूल्य सूचकांक पर आधारित मुद्रास्फीति नवंबर 2014 में घटकर मात्र 4.38 प्रतिशत रह गई है जबकि कांग्रेस की संप्रग सरकार के शासन में नवंबर 2013 में यह 11.16 प्रतिशत और मई 2014 में 8.28 प्रतिशत थी। श्री शाह ने कहा कि महंगाई में गिरावट के साथ ही पेट्रोल और डीजल सस्ते हुए हैं जिससे शहरी मध्यम वर्ग तथा गांवों में किसानों सहित समाज के सभी वर्गों को राहत मिली है। महंगाई नीचे आने से सस्ते कर्ज और निवेश के लिए अनुकूल माहौल बना है।

श्री शाह ने कहा कि सरकार ने नौकरी पेशा मध्यम वर्ग को बड़ी राहत देते हुए आयकर से छूट की सीमा दो लाख रुपये से बढ़ाकर ढाई लाख रुपये तथा वरिष्ठ नागरिकों के लिए ढाई लाख रुपये से बढ़ाकर तीन लाख रुपये की। इसी तरह किसानों को उपज का उचित मूल्य उपलब्ध कराने के लिए रबी और खरीफ फसलों के न्यूनतम समर्थन मूल्य में वृद्धि की गई।

लंबित आर्थिक सुधारों को लागू करने की दिशा में उठाए गए कदमों का जिक्र करते हुए श्री शाह ने कहा कि सरकार ने डीजल मूल्य नियंत्रण-मुक्त और घरेलू गैस का मूल्य निर्धारण करने जैसे अहम फैसले किए। इसके अलावा रेल, रक्षा और निर्माण क्षेत्र में विदेशी निवेश के नियम उदार बनाए। सरकार बीमा और जीएसटी जैसे महत्त्वपूर्ण विधेयकों को पारित कराने की दिशा में कदम बढ़ा रही है। श्री शाह ने कहा कि सरकार ने प्रधानमंत्री जन धन योजना शुरू की जिसके तहत पूरे देश में अब तक आठ करोड़ से अधिक बैंक खाते खुल चुके हैं। इससे गरीबों को साहूकारों के चंगुल से निकालकर वित्तीय तंत्र से जोड़ा जा सकेगा। इस योजना के तहत अब प्रत्येक परिवार का बैंक खाता खोलने का लक्ष्य है।

श्री शाह ने कहा कि युवाओं के लिए रोजगार के अवसर सृजित करने तथा औद्योगिक विकास की गति तेज करने के लिए सरकार ने 'मेक इन इंडिया' अभियान लांच किया। इसके अलावा सरकार ने पंडित दीनदयाल उपाध्याय श्रमेव

जयते कार्यक्रम भी शुरू किया है। पीएफ के लिए यूनिवर्सल नंबर शुरू किया है जिसकी मदद से कर्मचारी अपने पीएफ खाते को कहीं से भी संचालित कर सकेंगे। कर्मचारी भविष्य निधि संगठन के पास पड़े दावारहित 27,000 करोड़ रुपयों को श्रमिकों के हितों के लिए खर्च किया जाएगा।

श्री शाह ने कहा कि आम लोगों को बुनियादी सुविधाएं मुहैया कराने की कोशिश के तहत सरकार ने 43,000 करोड़ रुपये की दीनदयाल उपाध्याय ग्राम ज्योति योजना को मंजूरी दी है। इसके अलावा बिजली क्षेत्र में कई व्यापक सुधार भी किए हैं।

तमिलनाडु

"राज्य में भाजपा को सबसे बड़ी पार्टी बनाना है"

भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह ने तमिलनाडु प्रवास के दौरान 21 दिसंबर को एक संवाददाता सम्मेलन को संबोधित किया। श्री शाह ने इस अवसर पर तमिलनाडु की जनता से राज्य के चहुंमुखी विकास के लिए अधिकाधिक संख्या में भाजपा से जुड़ने का आग्रह किया।

श्री शाह ने कहा कि लोक सभा चुनाव 2014 में भाजपा को तमिलनाडु की जनता का बेहद प्यार मिला है। इसी का नतीजा है कि भाजपा ने तमिलनाडु की आठ सीटों पर चुनाव लड़ा जिसमें से एक सीट पर विजय प्राप्त की। पूरे राज्य में भाजपा को 5.56 प्रतिशत मत प्राप्त हुए।

श्री शाह ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी आज देश की सबसे बड़ी पार्टी है। तमिलनाडु में भाजपा तीसरी बड़ी पार्टी है। यहां कांग्रेस पार्टी चौथे नंबर पर है। कांग्रेस यहां एक भी सीट नहीं जीत पाई और उसे सिर्फ 4.37 प्रतिशत वोट मिले। अब हमें भाजपा को तमिलनाडु में भी सबसे बड़ी पार्टी बनाना है।

श्री शाह ने कहा कि तमिलनाडु की अर्थव्यवस्था आज संकट के दौर से गुजर रही है। कांग्रेस, द्रमुक और अन्नाद्रमुक के कुशासन के चलते तमिलनाडु आज विकास की राह में पिछड़ रहा है। यहां बेरोजगारी चरम पर है जिसकी वजह से युवाओं को रोजगार के लिए अपना गांव घर छोड़कर दूसरी जगह काम करने के लिए जाना पड़ता है।

श्री शाह ने कहा कि पिछले 15 साल में तमिलनाडु प्रगति करने के बजाय पीछे गया है। वर्ष 2000-01 में गुजरात की सालाना प्रति व्यक्ति आय मात्र 17,227 रुपये थी जबकि तमिलनाडु की 20,319 रुपये थी। उस समय गुजरात की प्रति व्यक्ति आय तमिलनाडु से तीन हजार रुपये रुपये कम थी। लेकिन एक दशक बाद वर्ष 2012-13 में गुजरात की प्रति व्यक्ति आय बढ़कर 61,220 रुपये हो गई जबकि तमिलनाडु की प्रति व्यक्ति आय मात्र 58,360 रुपये हो पाई। इस तरह आज गुजरात की प्रति व्यक्ति आय तमिलनाडु के मुकाबले तीन हजार रुपये अधिक है।

श्री शाह ने कहा कि ग्यारहवीं पंचवर्षीय योजना में गुजरात की विकास दर 9.34 प्रतिशत थी जबकि तमिलनाडु की विकास दर मात्र 8.58 प्रतिशत रही। आज देश में सबसे कम विकास दर तमिलनाडु में है। वित्त वर्ष 2012-13 में तमिलनाडु की विकास दर मात्र 3.39 प्रतिशत थी जबकि भाजपा शासित गुजरात की 7.96 प्रतिशत और मध्य प्रदेश की 10 प्रतिशत है।

श्री शाह ने कहा कि सामाजिक आर्थिक विकास के पैमाने पर भी आज तमिलनाडु पिछड़ गया है। साक्षरता के मामले में तमिलनाडु 14वें स्थान पर है। तमिलनाडु बेरोजगारी खत्म करने के मामले में 15 वें स्थान पर है। तमिलनाडु के

नौजवान रोजगार की तलाश में आज अपने घर को छोड़कर दूर जाने को मजबूर हैं। जिस तरह कांग्रेस तथा तीसरे मोर्चा के सहयोगी दलों के शासन वाले राज्यों में बेरोजगारी अधिक है, वैसे ही तमिलनाडु में भी बेरोजगारी दर काफी अधिक है। एनएसएसओ के अनुसार वर्ष 2011-12 में तमिलनाडु में बेरोजगारी दर 3.2 प्रतिशत है जबकि भाजपा शासित गुजरात में यह 0.7 प्रतिशत और मध्य प्रदेश में 1 प्रतिशत है जो देश न्यूनतम है। गरीबी कम करने के मामले में तमिलनाडु 11वें नंबर पर है। आज देश में सबसे कम गरीबी भाजपा शासित गोवा में हैं। प्रति व्यक्ति आय के मामले में तमिलनाडु

10वें नंबर पर है। आज देश में सर्वाधिक प्रति व्यक्ति आय भाजपा शासित गोवा की है।

श्री शाह ने कहा कि मोदी सरकार तमिलनाडु के विकास के लिए कदम उठा रही है। सरकार ने हाल में श्रीलंका में बंद तमिल मछुआरों को छुड़ाकर सकुशल देश वापस लाने के लिए वहां की सरकार से बातचीत की।

श्री शाह ने कहा कि सरकार ने विश्व स्तरीय नगरीय तंत्र विकसित करने के लिए 100 नए स्मार्ट शहर बसाने की प्रक्रिया शुरु की है और इसके लिए आम बजट में 7,060 करोड़ रुपये का आवंटन किया गया है। सरकार ने साफ-सफाई सुनिश्चित करने को स्वच्छ भारत अभियान भी लांच किया है। इसके लिए स्वच्छ भारत कोष की स्थापना की गई है।

श्री शाह ने कहा कि मोदी सरकार ने सुशासन स्थाापित करने के लिए यूपीए सरकार की नीतिगत जड़ता (Policy Paralysis) को खत्म किया है। सरकारी निर्णय लेने की प्रक्रिया तेज हुई है। संप्रग शासन में बने मंत्रि-समूहों को खत्म किया। सरकारी कर्मचारियों की हाजिरी के लिए http://attendance.gov.in/शुरू की ताकि केंद्र के सभी कर्मचारी समय पर दफ्तर पहुंचें। इसके साथ ही पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी के जन्मदिन 25 दिसंबर को सुशासन दिवस के रूप में मनाने का फैसला भी किया गया है।

श्री शाह ने कहा कि आज भारत के प्रति दुनिया का नजरिया बदल रहा है। श्री मोदी ने जिन-जिन देशों की यात्राएं की हैं वहां भारत का जयकार हो रहा है। राजग सरकार ने डब्ल्यूटीओ में किसानों और गरीबों के हितों की रक्षा के लिए कदम उठाए और भारत विकसित देशों को अपनी बात मनवाने में कामयाब रहा।

कालेधन और भ्रष्टाचार पर लगाम लगाने के लिए सरकार की ओर से किए जा रहे उपायों की चर्चा करते हुए श्री शाह ने कहा कि राजग ने सत्ता में आने के दूसरे ही दिन 27 मई को कालेधन की जांच के लिए विशेष जांच दल का गठन किया। इसके अलावा वित्त मंत्रालय ने एक विशेष दल स्विटजरलैंड भेजा जिसके बाद वहां की सरकार काले धन की जांच में भारत के साथ सहयोग करने के लिए राजी हुई। पारदर्शिता लाने के लिए डिजिटल इंडिया कार्यक्रम शुरू किया गया है। हाल में जारी अंतरराष्ट्रीय संस्था ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल के अनुसार करप्शन परसेप्शन इंडेक्स 2014 पर भारत की रैंकिंग 85 है जो कि पिछले साल 95 थी। इस तरह छह महीने की अल्पावधि में ही श्री मोदी जी के नेतृत्व में भारत की साख बेहतर हुई है।

श्री शाह ने कहा कि संयुक्त राष्ट्र ने 21 जून को 'अंतरराष्ट्रीय योग दिवस' घोषित किया है। भारत के लिए यह गौरवमयी व अभूतपूर्व उपलब्धि है और इसका पूरा श्रेय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी को जाता है। श्री मोदी ने 27 सितंबर को 2014 को संयुक्त राष्ट्र महा सभा को पहली बार संबोधित करते हुए 'अंतरराष्ट्रीय योग दिवस' घोषित करने का प्रस्ताव किया था। श्री मोदीजी के नेतृत्व में सरकार की कोशिश से तीन महीने के भीतर ही संयुक्त राष्ट्र ने 'अंतरराष्ट्रीय योग दिवस' घोषित कर दिया है। सबसे महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाने के लिए भारत के प्रस्ताव का 170 से अधिक देशों ने समर्थन किया। यह अद्‌भुत उपलब्धि सवा सौ करोड़ भारतीयों के लिए सम्मान और गर्व की बात है।

छत्तीसगढ़

"राज्य में हर गरीब तक राशन पहुंचाया जा रहा है"

भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह ने को छत्तीसगढ़ प्रवास के दौरान रायपुर में एक संवाददाता सम्मेलन को संबोधित किया। श्री शाह ने इस अवसर पर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में राजग सरकार की नीतियों व कार्यक्रमों की जानकारी दी और शुरुआती छह महीने की शानदार उपलब्धियों के लिए सरकार की सराहना की।

शेष पृष्ठ 23 पर

संसद का शीतकालीन सत्र

लोक सभा में महत्वपूर्ण कर सुधार विधेयक 'जीएसटी' प्रस्तुत

पाक आंतकी जकी-उर रहमान लखवी की पाकिस्तान में जमानत पर संसद में सर्वसम्मति से निंदा प्रस्ताव पारित

–संवाददाता द्वारा

हाल ही में संपन्न हुई सोलहवीं संसद का प्रथम शीतकालीन सत्र कई मामलों में महत्त्वपूर्ण रहा। इस संसद में जहां आजादी के बाद देश के सबसे बड़े कर-सुधार पर 'वस्तु व सेवा कर (जीएसटी)' से संबंधित संविधान संशोधन विधेयक लोक सभा में प्रस्तुत किया गया, वहीं मुंबई आतंकी हमले के षड्यंत्रकारी जकी उर रहमान लखवी को पाकिस्तान में जमानत पर रिहा करने के खिलाफ संसद में सर्वसम्मति से निंदा प्रस्ताव पारित किया गया। हालांकि इस संसद ने कई महत्वपूर्ण विधायी कार्य भी निपटाए, लेकिन विपक्ष के असहयोगात्मक एवं नकारात्मक रवैये के कारण संसद का खासतौर पर राज्य सभा का आखिरी दो सप्ताह हंगामे की भेंट चढ़ गया। इस सत्र की अन्य खास बात यह भी रही कि कांग्रेस और अन्य विपक्षी दल कई मामलों में जहां लोक सभा में सरकार का साथ देते दिखाई दिए, वहीं इन्होंने राज्य सभा में भारी हंगामा किया। विपक्षी दलों ने मामूली व महत्त्वहीन मुद्दों पर संसद की कार्यवाही नहीं चलने दी। विडंबना इस बात की है कि पश्चिम बंगाल में हुए चिट-फंड शारदा घोटाले के संदर्भ में हुई तृणमूल कांग्रेस के महत्त्वपूर्ण नेताओं के गिरफ्तारी के चलते तृणमूल कांग्रेस का साथ वाम दलों के साथ-साथ कांग्रेस ने भी दिया। धर्मांतरण के मुद्दे पर राज्य सभा में प्रधानमंत्री के बयान देने की जिद पर विपक्षी दलों ने कई दिनों तक कार्यवाही न चलने दी, जबकि सरकार का रुख सदैव सकारात्मक रहा और मंत्रियों ने इस संदर्भ में स्पष्टीकरण भी दिए।

शीतकालीन सत्र 2014 पर एक नज़र

बैठकें	लोक सभा	राज्य सभा
सत्र की अवधि	24 नवम्बर से 23 दिसम्बर	
बैठकों के दिनों की संख्या	22	22
बैठकों का कुल वास्तविक समय	129 घंटे 33 मिनट	76 घंटे +
व्यवधान / स्थगन के कारण समय की बर्बादी	3 घंटे 28 मिनट	62 घंटे +
अतिरिक्त समय में चलीं सदन की बैठकें	17 घंटे 30 मिनट	लगभग 8 घंटे
प्रश्न		
स्वीकृत तारांकित प्रश्न	440	380
तारांकित प्रश्नों के मौखिक उत्तर	103	48
स्वीकृत अतारांकित प्रश्न	5,058	3,470

लोक सभा		राज्य सभा	
सरकारी विधेयक		**सरकारी विधेयक**	
विधेयक पेश	15	विधेयक पेश	1
विधेयक पारित	11	विधेयक वापस	6
निजी विधेयक		विधेयक पारित / लौटाए	12
विधेयक पेश	68	प्रवर समिति को भेजे गए विधेयक	2
विधेयकों पर चर्चा	3	**निजी विधेयक**	
विधेयकों पर आंशिक चर्चा	1	विधेयक पेश	31
विधेयक वापस	2	विधेयकों पर आंशिक चर्चा	1
		विधेयक वापस	2

KBK Infographics

जीएसटी से संबंधित संविधान संशोधन विधेयक लोक सभा में प्रस्तुत

जीएसटी से संबंधित संविधान संशोधन विधेयक लोक सभा में प्रस्तुत किया जाना सरकार की एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है। यह इस दशक का सबसे अहम आर्थिक सुधार है। जीएसटी लागू होने के बाद वस्तुओं और सेवाओं पर अलग-अलग लगने वाले सभी कर एक ही कर में समाहित हो जाएंगे।

इससे पूरे देश में वस्तुओं और सेवाओं की कीमतें लगभग एक हो जाएंगी। मैन्युफैक्चरिंग लागत घटेगी, जिससे उपभोक्ताओं के लिए सामान सस्ता होगा। अप्रत्यक्ष कर की इस नई व्यवस्था से अर्थव्यवस्था को 60 लाख करोड़ रुपये का फायदा होगा।

जीएसटी एक वैट है, जो वस्तुओं और सेवाओं दोनों पर लगेगा। मौजूदा दौर में वैट सिर्फ वस्तुओं पर लागू होता है। जीएसटी दो स्तरों पर लगेगा। एक केंद्रीय जीएसटी होगा, जबकि दूसरा राज्य का। इससे पूरा देश एकीकृत बाजार

में तब्दील हो जाएगा और ज्यादातर अप्रत्यक्ष कर जीएसटी में समाहित हो जाएंगे। संसद में वित्त मंत्री श्री अरुण जेटली ने कहा कि वस्तु व सेवा कर (जीएसटी) संबंधित संविधान संशोधन विधेयक के मसविदे में राज्यों की चिंताओं को ध्यान में रखा गया है। उन्होंने प्रस्तावित कानून को आजादी के बाद देश का सबसे बड़ा एकल कर सुधार करार दिया।

जेटली ने राज्यसभा में कहा कि यह कानून देश में सहयोगात्मक संघवाद को मजबूत करेगा क्योंकि जीएसटी के बारे में फैसला करने वाली परिषद में दो तिहाई सदस्य राज्यों से जबकि एक तिहाई सदस्य केंद्र के होंगे। उन्होंने कहा कि इस परिषद में 75 फीसद के बहुमत से फैसले किए जाएंगे।

वित्त मंत्री ने कहा कि पिछले सप्ताह 11 दिसंबर को चंद राज्यों के मंत्रियों व प्रतिनिधियों के साथ उनकी बैठक हुई थी जिसमें जीएसटी से संबंधित संविधान संशोधन विधेयक के मसविदे को दिखाया गया। उन्होंने कहा कि राज्यों की राय पर इस मसविदे में कुछ सुधार भी किए गए हैं। उन्होंने कहा कि जीएसटी केंद्र व राज्य दोनों ही के लिए लाभ की स्थिति होगी। जीएसटी लागू होने से राज्यों को कर की जो हानि होगी उसकी भरपाई के लिए संवैधानिक गारंटी का प्रावधान होगा।

जीएसटी को आजादी के बाद सबसे बड़ा एकल कर सुधार करार देते हुए श्री जेटली ने कहा कि वैट के विपरीत इसमें केवल अंतिम बिंदु पर कर लगाया जाएगा। इससे व्यावहारिक स्तर पर कई फायदे होंगे।

पेट्रोल व डीजल पर उत्पाद कर बढ़ाने के मुद्दे पर श्री जेटली ने कहा कि सरकार ने यह कदम इसलिए उठाया है ताकि सामाजिक क्षेत्रों पर अधिक खर्च किया जा सके। वे नहीं चाहते कि सारा बोझ आयकर दाताओं पर ही डाला जाए। इसके अलावा, तेल कंपनियों को अपनी कम वसूली की भरपाई भी करनी है अन्यथा उनका नुकसान बढ़ता जाएगा। मौजूदा सरकार के आने के बाद पेट्रोल और डीजल के दामों में आठ बार कमी की गई है। श्री जेटली ने कहा कि सरकार व्यय को युक्तिसंगत बना रही है। साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि उभरती हुई अन्य अर्थव्यवस्थाओं की मुद्रा की तुलना में रुपया डालर के मुकाबले उतार-चढ़ाव का अपेक्षाकृत अधिक शिकार नहीं हुआ है।

इसी दौरान भाकपा के डी. राजा ने वित्त मंत्री से जानना चाहा कि योजना आयोग के खत्म हो जाने के बाद अनुसूचित जाति व अनुसूचित जनजाति मद के तहत आबंटित की जाने वाली राशि का भविष्य क्या होगा। इस पर वित्त मंत्री ने कहा कि ढांचा जो भी रहे, लेकिन इस मद के तहत राशि का आबंटन जारी रहेगा।

आतंकी लखवी को पाकिस्तान में जमानत पर लोकसभा में सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित

मुंबई आतंकी हमले के षड्यंत्रकारी जकी उर रहमान लखवी को पाकिस्तान में जमानत पर रिहा करने के खिलाफ संसद के दोनों सदनों में सर्वसम्मति से निंदा प्रस्ताव पारित किया गया। लोकसभा में सरकार और विभिन्न दलों के सदस्यों ने प्रधानमंत्री के साथ बैठकर 19 दिसंबर को एक प्रस्ताव तैयार किया जिसे बाद में सर्वसम्मति से सदन ने स्वीकार कर लिया। अगले दिन राज्य सभा ने भी निंदा प्रस्ताव पारित कर दिया।

गौरतलब है कि पाकिस्तान की एक अदालत ने 18 दिसंबर को मुंबई हमले के सूत्रधारों में से एक खतरनाक आतंकवादी जकीउर्रहमान लखवी को जमानत दे दी।

लोकसभा में सर्वसम्मति से अंगीकार किए गए प्रस्ताव में कहा गया है- हम इस मामले में अभियोजन में बार-बार देरी और पाकिस्तान सरकार के लापरवाहीपूर्ण रवैए से चिंतित हैं जिसके कारण आरोपी आतंकवादी को जमानत मिली। हम इस घटना पर भारत के लोगों की गहरी चिंता व्यक्त करते हैं जो पेशावर में एक स्कूल में सौ से अधिक निर्दोष बच्चों व अन्य लोगों की हत्या के एक दिन बाद सामने आई है जहां उसी देश (पाकिस्तान) में एक आरोपी आतंकवादी को जमानत दे दी गई।

यह प्रस्ताव लोकसभा अध्यक्ष श्रीमती सुमित्रा महाजन ने पढ़ा। इसमें कहा गया कि ऐसा लगता है कि यह सबक नहीं सीखा गया कि आतंकवादियों के साथ कोई समझौता नहीं किया जाना चाहिए। सदन ने पाकिस्तान सरकार का आह्वान किया कि वह जमानत के आदेश के खिलाफ अपील की अपने घोषित इरादे के अनुरूप कारगर ढंग से आगे बढ़े। प्रस्ताव में वहां की सरकार से यह सुनिश्चित करने की मांग की गई है कि किसी भी स्थिति में ऐसे व्यक्ति को रिहा करने की इजाजत नहीं दी जाए। प्रस्ताव में कहा गया है कि हम पाकिस्तान के अपने क्षेत्र में आतंकवाद के आधारभूत ढांचे को ध्वस्त करने की जरूरत को दोहराते हैं और यह सुनिश्चित करने को कहते हैं कि उस देश में आतंकवादियों को भारत और क्षेत्र के अन्य देशों के खिलाफ दुष्ट गतिविधियों

को जारी रखने के लिए खुला छोड़ने की अनुमति नहीं दी जाए।

प्रस्ताव में कहा गया है कि हम भारत सरकार से आग्रह करते हैं कि वह पाकिस्तान पर दबाव बनाने के लिए अन्य देशों के साथ अपने संबंधों समेत अपने अख्तियार में ऐसे सभी कदम उठाए ताकि इस मामले को संतोषजनक निष्कर्ष तक पहुंचाया जा सके। इसके अनुसार भारत के लोग 26/11 आतंकी हमले को अंजाम देने वालों और पाकिस्तान में उनके आकाओं व सहयोगियों को न्याय के कटघरे में खड़ा करने को अत्यधिक महत्त्व देते हैं। लोकसभा सर्वसम्मति से मुंबई आतंकी हमले में 166 लोगों की हत्या करने के षड्यंत्रकारी जकी उर रहमान लखवी को जमानत दिए जाने के निर्णय की निंदा करती है।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने लोकसभा में लखवी को जमानत दिए जाने को लेकर पाकिस्तान के रवैय्ये पर हैरानी जताई। उन्होंने कहा कि पेशावर में आतंक वादियों के 132 स्कूली बच्चों की निर्मम हत्या से हर भारतीय दुखी है लेकिन पड़ोसी देश ने मुंबई हमले के अहम गुनाहगार को जमानत देकर मानवता को सदमा पहुंचाने वाला काम किया है।

श्री मोदी ने कहा कि सदन ने पेशावर में बच्चों की हत्या पर जो भावना व्यक्त की है सरकार की गतिविधियां उसी के अनुकूल रहेंगी।

प्रधानमंत्री ने कहा कि आतंकवादियों की घटना की भारत ने कड़े शब्दों में निंदा करते हुए अपनी भावना व्यक्त की है। इस घटना से पाकिस्तान जितना दु:खी हुआ, भारत को उससे रत्तीभर उससे कम दुख नहीं हुआ है। इस घटना से हर हिन्दुस्तानी की आंख में आंसू थे लेकिन इस भावना के बाद भी पाकिस्तान का रुख सदमा पहुंचाने वाला है।

वहीं विदेश मंत्री श्रीमती सुषमा स्वराज ने कहा कि लखवी को जमानत देकर पाकिस्तान ने आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई के अपने फैसले का ही मजाक उड़ाया है। भारत ने कड़े शब्दों में अपनी बात पाक को पहुंचा दी है।

कांग्रेस के श्री मल्लिकार्जुन खड़गे, भाजपा के किरीट सोमैय्या, माकपा के मोहम्मद सलीम, तृणमूल कांग्रेस के कल्याण बनर्जी, शिवसेना के अरविंद सावंत और अन्य सदस्यों ने इस विषय को 19 दिसंबर को सदन में उठाया और सदन से इस बारे में एक प्रस्ताव पारित करने का सुझाव दिया।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि लोकसभा ने लखवी को पाकिस्तान में जमानत पर रिहा करने के बारे में एक स्वर में जो चिंता जताई और निंदा की है, सरकार की भावना सदन की भावना के अनुरूप रहेगी।

शीत कालीन सत्र में कुल 11 विधेयक पारित

16वीं लोक सभा के प्रथम शीत कालीन सत्र में दोनों सदनों ने कुल 11 विधेयक पारित किए। लोकसभा में कुल 15 विधेयक पेश किए गए, जिसमें 13 विधेयक पारित किए गए, जबकि राज्य सभा में विपक्ष के असहयोगात्मक व नकारात्मक रवैय्ये के चलते सिर्फ 11 विधेयक ही पारित हो सके। गौरतलब है कि सरकार बीमा कानून संशोधन जैसे महत्त्वपूर्ण विधेयक संसद से पारित करना चाहती थी, लेकिन विपक्ष के नकरात्मक रवैए के कारण ऐसा संभव न हो सका।

इस सत्र में दोनों सदनों द्वारा पारित मुख्य विधेयकों में 'दिल्ली विशेष पुलिस स्थापना (संशोधन) विधेयक 2014', 'श्रम कानून (कुछ प्रतिष्ठानों द्वारा रिटर्न जमा कराने और रजिस्टर रखने से छूट) संशोधन विधेयक 2014', 'वस्त्र उपक्रम (राष्ट्रीयकरण) कानून (संशोधन और वैधता) विधेयक 2014', 'मर्चेंट शिपिंग (संशोधन) विधेयक 2014', 'योजना और वास्तुकला विधेयक 2014', 'केंद्रीय विश्वविद्यालय (संशोधन) विधेयक 2014', 'भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान विधेयक 2014' शामिल हैं।

संसद में विपक्ष का नकारात्मक रवैय्या

कुछेक मामलों को छोड़कर संसद के शीतकालीन सत्र के दौरान विपक्ष का नकारात्मक रवैय्या रहा। महत्वहीन मुद्दों को लेकर संसद की कार्यवाही बाधित की गई। लोक सभा में एनडीए के भारी बहुमत के दबाव में विपक्ष का सहयोगात्मक रवैय्या दिखाई पड़ा, लेकिन वहीं विपक्ष राज्य सभा में महत्वहीन मुद्दों पर भी अनावश्यक रूप से आक्रामक दिखा।

राज्यों में परस्पर विरोधी दल शारदा चिट-फंड जैसे भ्रष्टाचार जैसे मुद्दों पर भी एकजुटता दिखाई, जो किसी भी रूप से अनैतिक है।

धर्मांतरण के मुद्दे पर राज्यसभा में लगातार पांच दिन हंगामा होता रहा, जिसके कारण सदन की कार्यवाही अनेक बार बाधित हुई। विपक्ष धर्मांतरण मुद्दे पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के बयान की मांग पर अड़ी रही। यही नहीं, इसी सभा में शीत कालीन सत्र के दूसरे सप्ताह में 4 दिन मंत्रिपरिषद के एक सदस्य द्वारा की गई टिप्पणियों को लेकर लगातार कामकाज में बाधा उत्पन्न हुई, जबकि मंत्री द्वारा 5 मिनट में 4 बार माफी मांगने के बाद भी विपक्षी दल संतुष्ट नहीं हुए और संसद की कार्यवाही में बाधा डाली। ■

अटलजी- एक विराट व्यक्तित्व

– अरूण जेटली

श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी 25 दिसम्बर 2014 को 90 वर्ष के हो जाएंगे। मैं उन्हें ढेर सारी शुभकामनाएं देता हूं। देश ने उन्हें और पंडित मदन मोहन मालवीय जी को भारत रत्न देने की घोषणा की है।

मैंने, 1967 में पहली बार अटलजी का भाषण सुना था, जब मैं स्कूल में पढ़ता था। दिल्ली में 1967 के आम चुनाव के लिए मेरे घर के नजदीक एक राजनैतिक रैली हुई थी। वह रैली को संबोधित करने आए थे। एक अच्छे वक्ता के रूप में वह पहले ही नाम कमा चुके थे। वह एक प्रतिष्ठित राजनैतिक नेता बनने की ओर अग्रसर थे। उनका भाषण सुनने के बाद अनेक युवक उनके भाषण के अंशों को दोहराया करते थे। वे उनके स्टाइल की नकल किया करते थे।

मैं 1970 में एबीवीपी का छात्र कार्यकर्ता बना। अटलजी संसद और राजनैतिक रैलियों में एक जाना-पहचाना चेहरा थे। हमने दिल्ली विश्वविद्यालय में उन्हें कई बार व्याख्यान देने के लिए बुलाया। जब भी हम चाहते थे कि कुछ मुद्दों को संसद में उठाया जाए तो हम उनके पास पहुंच जाते थे। मेरी उनसे जान-पहचान उस वक्त शुरू हुई जब मैं दिल्ली विश्वविदलालय में छात्र नेता था। इसके बाद मेरी उनके साथ अक्सर बातचीत होती रहती थी। वह बहुत अच्छे श्रोता रहे हैं। हमारे द्वारा दी गई कुछ उत्साहवर्धक जानकारियों पर कभी-कभार वह मजाकिया प्रतिक्रिया देते थे। जेपी आंदोलन के दौरान 1974 में वह देश भर में रैलियों को संबोधित करने में व्यस्त थे।

1975 में जब आपात स्थिति लागू की गई, श्री आडवाणी जी और कुछ अन्य राजनीतिज्ञों के साथ उन्हें नजरबंद कर दिया गया। मुझे आरंभ में अम्बाला जेल में और उसके बाद दिल्ली की तिहाड़ जेल में बंद कर दिया गया। हमें पता चला कि अटल जी की पीठ में स्वास्थ्य संबंधी कुछ गंभीर परेशानी हो गई है। उन्हें दिल्ली में उनके घर में नजरबंद कर दिया गया। उनकी पीठ में तकलीफ बढ़ चुकी थी और आपात स्थिति का लंबा समय उन्होंने एम्स में बिताया जहां उनकी सर्जरी की गई। इस अवधि के दौरान हमें उनकी ताजा कविता मिली जो उन्होंने अस्पताल में लिखी थी।

कविता का विषय प्रासंगिक था। एम्स में डॉक्टरों ने अटल जी से कहा, 'आप ज्यादा झुक गए होंगे'। जिस पर उन्होंने जवाब दिया- डॉक्टर साहब ''झुक तो सकते नहीं, यू कहिए मुड़ गए होंगे''। उन्होंने एक कविता लिख डाली जो 1977 के चुनाव में अक्सर सुनाई देती थी। कविता कुछ इस प्रकार थी- ''टूट सकते हैं मगर हम झुक सकते नहीं''।

इसके बाद हमने 1977 में उन्हें भारत के विदेश मंत्री, एक विपक्षी सांसद, संसद 'लोक सभा' में विपक्ष का नेता बनते देखा। जैसे-जैसे वह आगे बढ़ रहे थे, मेरे मन में 1990 में उनकी छवि ऐसे 'श्रेष्ठ व्यक्ति' की बन चुकी थी, जो कभी प्रधानमंत्री नहीं बन सकेगा, लेकिन इतिहास ने साबित कर दिया और उन्होंने भारत के उत्कृष्ट प्रधानमंत्रियों में से एक के रूप में नाम कमाया।

अटल जी एक लोकतांत्रिक व्यवस्था की उपज हैं, और संसदीय मूल्यों के साथ आगे बड़े हैं। उन्होंने आम सहमति और सौहार्द, दोनों सदगुणों को महसूस किया। मंत्रिमंडल की बैठकों में कभी भी उनका आचरण तनावपूर्ण नहीं रहा। अगर हम में से कोई भी, कभी भी कोई विषय उठाता था, अथवा किसी मुद्दे पर विरोध होता था, तो वह चर्चा को प्रोत्साहन देते थे। निश्चित तौर पर आखिरी शब्द उन्हीं के होते थे।

अटल जी एक लोकतांत्रिक व्यवस्था की उपज हैं, और संसदीय मूल्यों के साथ आगे बड़े हैं। उन्होंने आम सहमति और सौहार्द, दोनों सदगुणों को महसूस किया। मंत्रिमंडल की बैठकों में कभी भी उनका आचरण तनावपूर्ण नहीं रहा। अगर हम में से कोई भी, कभी भी कोई विषय उठाता था, अथवा किसी मुद्दे पर विरोध होता था, तो वह चर्चा को प्रोत्साहन देते थे। निश्चित तौर पर आखिरी शब्द उन्हीं के होते थे। आर्थिक

शेष पृष्ठ 23 पर

रूस के राष्ट्रपति का भारत दौरा : रिपोर्ट

भारत-रूस रणनीतिक साक्षेदारी बैठक सम्पन्न

प्रधानमंत्री मोदी ने भारत के दीर्घकालीन मित्र रूस का दिया साथ

– विकाश आनंद

पश्चिमी देशों द्वारा रूस पर प्रतिबन्ध लगाए जाने के बीच इस बार रूस के राष्ट्रपति वी.वी. पुतिन ने 11 दिसम्बर को नई दिल्ली में 15वीं वार्षिक भारत-रूस शिखर में शामिल होने पहुंचे। इन उच्चस्तरीय वार्ता की शुरूआत अक्तूबर 2000 में तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी और रूस के राष्ट्रपति वी.वी. पुतिन के बीच 'भारत-रूस रणनीतिक सांझेदारी की घोषणा' के बाद हुई। यह घोषणा शीतकालीन युद्ध के बाद भारत-रूस सम्बन्धों का प्रमुख राजनीतिक पहल थी। तब से औपचारिक स्तरों पर सहयोग बढ़ाने तथा सहयोगी गतिविधियां अपनाने के लिए नियमित संवाद का दौर शुरू हुआ है।

इस एक शिखर वार्ता ने विशेष ध्यान आकृष्ट किया क्योंकि यूक्रेन और क्रीमिया मुद्दे पर यूएस और यूरोपीयन संघ ने रूस संघ में क्रीमिया गणतंत्र को शामिल किये जाने पर प्रतिबंध लगा दिया था। यूएसए की कड़ी आपत्ति के बावजूद भारत के पुतिन प्रतिनिधिमण्डल का स्वागत किया जिसमें क्रीमिया के प्रधानमंत्री सरगई अक्सेनोव शामिल थे। भारत की इस दृष्टि से स्पष्ट है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने क्रीमिया मुद्दे पर दीर्घकालीन समय पर खरी उतरी रूस की मित्रता को समझा है।

नई दिल्ली में राष्ट्रपति पुतिन के एक दिवसीय प्रवास के दौरान दोनों देशों ने कई समझौतों पर हस्ताक्षर किए और आतंकवाद जैसे खतरों से लड़ने की शपथ ली। उन्होंने दोनों देशों की बीच व्यापार को 6 बिलियन डालर से बढ़ा कर 30 बिलियन करने का पारस्परिक संकल्प भी किया। डालर के मुकाबले विश्व की राष्ट्रीय मुद्राओं की कमजोरी को देखते हुए दोनों देशों ने पारस्परिक व्यापार में राष्ट्रीय मुद्राओं में भुगतान पर प्रोत्साहन देने का निर्णय लिया जब रूस ने 2035 तक 12 न्यूक्लियर रिएक्टरों लगाने का वायदा किया। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने रूस को आश्वस्त किया कि वह रक्षा आपूर्ति के मामले में सदैव भारत के लिए रूस सर्वोच्च स्थान पर रहेगा।

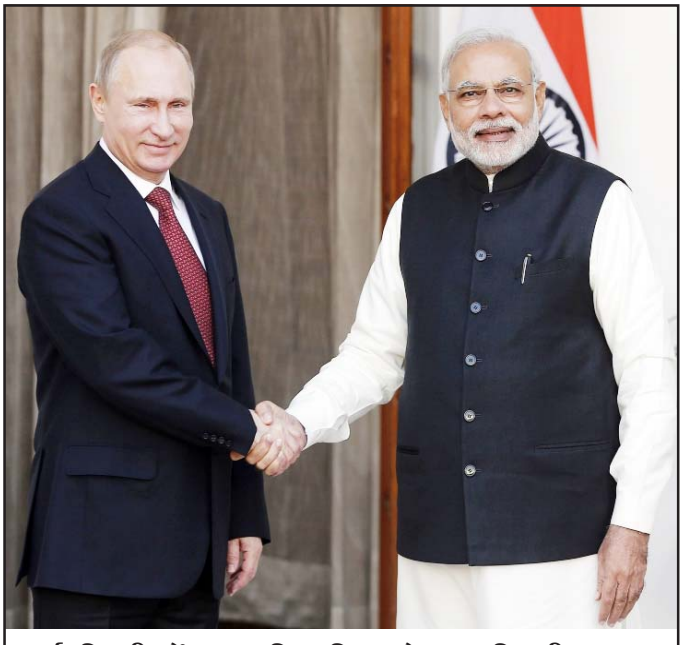

नई दिल्ली में राष्ट्रपति पुतिन के एक दिवसीय प्रवास के दौरान दोनों देशों ने कई समझौतों पर हस्ताक्षर किए और आतंकवाद जैसे खतरों से लड़ने की शपथ ली। उन्होंने दोनों देशों की बीच व्यापार को 6 बिलियन डालर से बढ़ा कर 30 बिलियन करने का पारस्परिक संकल्प भी किया।

ऊर्जा

भारत और रूस ने विज्ञान और प्रौद्योगिकी उद्योग, उपस्करों और कल-पुर्जों, यूरेनियम खनन, न्यूक्लियर ईंधन के बनाने और आपूर्ति, जल ईंधन के प्रबंधन और न्यूक्लियर ईंधन चक्र के अन्य पहलुओं में अपना सहयोग बढ़ाने की प्रतिज्ञा की। ऊर्जा के मुद्दे पर सहयोग करने के लिए रूस ने भारत से कुंडानकुलम के अलावा दूसरे और स्थानों पर न्यूक्लियर रियेक्टर बनाने के लिए सहमति बताई। दोनों पक्षों ने माना कि मई 2013 में ब्लाडीवोस्टोक शहर में आयोजित पहले

एपीईएफ ने यूएनईएससीएपी के तत्वाधान में क्षेत्रीय ऊर्जा संवाद की नींव रख दी थी।

प्रौद्योगिकी और नवीन आविष्कार

दोनों नेताओं ने बैठक में 2015 में भारतीय उपग्रह 'आर्यभट्ट' के अन्तरिक्ष के भेजने के 40 वर्ष पेरे होने पर यादगार कार्यक्रम आयोजित करने का निर्णय लिया। भूमि खनन और उनके आर्थिक तथा वाणिज्यिक उपयोगिता को महत्व प्रदान करते हुए दोनों पक्षों ने दुर्लभ पदार्थ खनन, प्रौद्योगिकी विकास और अनुसंधान में सहयोग बढ़ाने पर सहमत हुए। दोनों देश दुर्लभ भूमि पदार्थों की प्रक्रिया के लिए प्रौद्योगिकी विकास में शामिल होंगे।

पर्यावरण

पर्यावरण के मुद्दे पर भारत और रूस दोनों ने आर्कटिक परिषद द्वारा आर्कटिक मुद्दों के समाधान के लिए सहयोगी गतिविधियां बढ़ाने की महत्ता को स्वीकार किया क्योंकि रूस इसका सदस्य है और भारत ने मई 2013 में पर्यवेक्षक के रूप में शामिल हुआ था। दोनों पक्षों ने तेजी से बदलते जा रहे आर्कटिक क्षेत्र के सामने खड़ी चुनौतियों के अध्ययन में (जैसे बर्फ बहने, पर्यावरण परिवर्तन, समुद्री जीवन और बायोडाइवर्सिटि (वैज्ञानिक सहयोग की सुविधा पर सहमति जताई)

आर्थिक साझेदारी

आर्थिक साझेदारी को बढ़ाने के लिए दोनों नेताओं ने भारतीय और रूसी उद्यमों को प्रोत्साहित करने पर सहमति जताई ताकि आधरभूत संरचना के विकास और मैन्युफैक्चरिंग क्षेत्र बढ़ाने पर ध्यान देने के लिए नए अवसरों का पूरा उपयोग किया जा सके। आशा है कि रूसी कम्पनी भारतीय क्षेत्रों में व्यापक स्तर पर उपलब्ध अवसरों का उपयोग करेगी और 'मेक इन इंडिया' को सफल बनाएगी। दोनों पक्षों ने निर्णय लिया कि पारस्परिक व्यापार में राष्ट्रीय मुद्राओं का उपयोग किया जाएगा। इस उद्देश्य के लिए स्थापित कार्यकारी समूह राष्ट्रीय मुद्राओं के लेन-देन मामलों में वर्तमान बाधाओं को समाप्त करने की सिफारिशें देगा। इस बात पर जोर दिया जाएगा कि डीएमआईसी, स्मार्ट सिटीज और फ्रेट कारीडोर और दूरसंचार, बिजली और सड़कों जैसे और भी बड़े क्षेत्रों में प्रमुख इंफ्रास्ट्रक्चर प्रमुख परियोजनाओं में रूसी निवेश को बढ़ावा देगा। रूस में, फार्मास्युटिकल्स, फर्टिलाइजर्स, कोयला और ऊर्जा जैसे क्षेत्रों में, औद्योगिक पार्कों और टेक्नालोजी प्लेटफार्मों में भारतीय भागीदारी को बढ़ावा दिया जाएगा।

दोनों पक्षों ने पारस्परिक सुविधा उपायों को बढ़ाने पर सहमति जताई, जैसे विशेष रूप से सरल सीमा शुल्क प्रक्रिया अपनाई जाएगी। इस प्रसंग में उन्होंने माना कि 'ग्रीन कारीडोर' परियोजनाओं पर जल्द ही प्रोटोकाल तैयार किया जाएगा।

विश्व व्यवस्था तथा विश्व शांति

शिखर वार्ता के बाद जारी प्रेस वक्तव्य में दोनों नेताओं के विश्व राजनीतिक, आर्थिक, वित्तीय और सामाजिक संस्थाओं के विस्तारकरण की शपथ ली ताकि इन संस्थानों को अन्तरराष्ट्रीय समुदाय के सभी क्षेत्रों की आकांक्षाओं और हितों को बेहतर ढंग से जगह दिया जा सके। इन्होंने कहा कि भारत और रूस दोनों ने ही ऐसे आर्थिक प्रतिबंधों का विरोध किया था जिनका अनुमोदन संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद ने ना किया हो। यह ध्यान देने वाली बात है कि पश्चिमी देशों द्वारा रूस पर लगाए गए प्रतिबंधों को यूएनएससी का अनुमोदन प्राप्त नहीं था। श्री मोदी और श्री पुतिन फिर इस आवश्यकता की पुष्टि कि संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में सुधार की आवश्यकता है ताकि यह और अधिक प्रतिनिधित्वशील बने और कारगर ढंग से उभरती चुनौतियों का सामना कर सके। रूस ने फिर दोहराया कि वह परिषद में स्थायी सदस्यता के लिए भारत की उम्मीदवारी को समर्थन करेगा।

रूस और भारत दोनों इस्लामी आतंकवाद से प्रभावित है। उनका मानना है कि हाल के वर्षों में अन्तरराष्ट्रीय आतंकवाद की प्रकृति और फैलाव का विश्व स्तर पर समाधान होना चाहिए और अन्तरराष्ट्रीय समुदाय के सहयोगी उपायों में किसी प्रकार का दोहरा मानदण्ड या चुनिंदा उपाए नहीं होने चाहिए।

रूस और भारत दोनों इस्लामी आतंकवाद से प्रभावित है। उनका मानना है कि हाल के वर्षों में अन्तरराष्ट्रीय आतंकवाद की प्रकृति और फैलाव का विश्व स्तर पर समाधान होना चाहिए और अन्तरराष्ट्रीय समुदाय के सहयोगी उपायों में किसी प्रकार का दोहरा मानदण्ड या चुनिंदा उपाए नहीं होने चाहिए।

दोनों नेताओं ने जम्मू और काश्मीर, भारत और चेचेन्या, रूस में हाल की असंवेदनशील आंतकवादी गतिविधियों में गए प्राणों पर शोक व्यक्त किया। अफगानिस्तान के मुद्दे पर, नेताओं ने अफगानिस्तान में राजनीतिक शांति का स्वागत किया और अन्तरराष्ट्रीय समुदाय

से उस देश में पुनर्गठन और आर्थिक विकास में सहयोग देने के प्रयासों का आह्वान किया।

न्यूक्लियर शस्त्रों के विच्छेदन मुद्दे पर दोनों देशों ने न्यूक्लियर आतंकवाद का मुकाबला करने के लिए पहल का समर्थन देने को कहा और कड़े राष्ट्रीय निर्यात उपाय करने को कहा। पुतिन ने भारत की इस इच्छा का समर्थन किया कि भारत को न्यूक्लियर आपूर्ति समूह का पूर्ण सदस्य बनाया जाए और इस मामले पर समूह के सकारात्मक निर्णय लेने के लिए तैयार रहना चाहिए। रूस ने एमटीसीआर में पूर्ण सदस्यता के भारतीय हितों का समर्थन भी किया। रूस ने नवम्बर 2014 में भारत द्वारा प्रारम्भ सरल वीजा व्यवस्था का स्वागत किया जिसमें रूस के नागरिकों को भारत में निर्धारित हवाई अड्डों पर उनके आने पर इलेक्ट्रानिक वीजा प्रदान किया जाएगा।

दोनों पक्षों ने तैल, रक्षा, निवेश जैसे विभिन्न क्षेत्रों में 20 पैक्टों पर हस्ताक्षर किए। बहुत से पैक्टों में वाणिज्यिक अनुबंध है, जैसे टाटा पावर एंड रशियन डायरेक्ट इंवेस्टमेंट फंड फॉर एक्सप्लोरिंग आपोरचुनिटीज इन एनर्जी सेक्टर एक्रास रशिया। एक समझौते पर रूसी फर्टलाइजर कम्पनी 'एक्रान' और नेशनल मिनरल डेवलेपमेंट कार्पोरेशन के बीच एक्रान के 2 बिलियन डालर परियोजना में भारतीय कम्पनियों के समूह द्वारा अधिग्रहण के लिए हस्ताक्षर भी किए गए। रूसी तैल उत्पादक ''रोसने फिट'' ने एक समझौते पर हस्ताक्षर किए जिससे भातर को प्रति वर्ष 10 मिलियन टन तेल की आपूर्ति होगी।■

पृष्ठ 16 का शेष...

श्री शाह ने प्रगति पथ पर अग्रसर छत्तीसगढ़ की भाजपा सरकार के कार्यों की सराहना भी की। मुख्यमंत्री श्री रमन सिंह के नेतृत्व में छत्तीसगढ़ की भाजपा सरकार की उपलब्धियों का जिक्र करते हुए श्री शाह ने कहा कि छत्तीसगढ़ शहरी, ग्रामीण, कृषि, उद्योग सहित सभी क्षेत्रों को 24 घंटे बिजली देने वाला राज्य है। यहां बिजली की दर भी कम है। श्री शाह ने कहा कि छत्तीसगढ़ देश का पहला राज्य है जिसने खाद्य सुरक्षा और पोषण सुरक्षा कानून बनाकर 50 लाख से अधिक परिवारों को, जो राज्य की जनसंख्या का लगभग 90 प्रतिशत हैं, एक और दो रुपये किलोग्राम चावल का वितरण सुनिश्चित किया।

श्री शाह ने कहा कि छत्तीसगढ़ ने 'राइट टू स्किल' बनाया। स्किल डवलपमेंट के तहत 15 से 45 आयु वर्ग के 1,50,000 युवाओं को विभिन्न स्किल की ट्रेनिंग प्रदान की गयी। दंतेवाड़ा जैसी दूरस्थ और चुनौतीपूर्ण जगह पर लाइवलीहुड कालेज की स्थापना कर 10 हजार से अधिक युवाओं को प्रशिक्षण प्रदान किया गया।

श्री शाह ने कहा कि छत्तीसगढ़ सरकार ने राज्य की जनता को यूनिवर्सल हेल्थ इंश्योरेंस दिया है। यहां 56 लाख परिवारों को स्मार्ट कार्ड के माध्यम से 30 हजार रूपये की नि:शुल्क उपचार सुविधा उपलब्ध है। राज्य में शिक्षा और स्वास्थ्य के नए संस्थानों की स्थापना के साथ-साथ विश्वस्तरीय ग्रीनफील्ड कैपिटल सिटी नया रायपुर का विकास किया जा रहा है। ■

पृष्ठ 20 का शेष...

विचारों में वह उदार थे। उन्होंने बुनियादी ढांचे के गठन का महत्व समझ लिया था। राष्ट्रीय राजमार्ग कार्यक्रम और बिजली क्षेत्र में सुधार उनसे विरासत में मिले हैं। वह अपने पड़ोसी देशों के साथ संबंधों को सामान्य बनाने के लिए प्रतिबद्ध रहे। पाकिस्तान के साथ उनकी 'बस पहल' गंभीर राजनैतिक जोखिम उठाकर की गई, क्योंकि इसके लिए उन्हें अपने निर्वाचन क्षेत्र को विश्वास में लेना पड़ा था। 2003 में उन्होंने चीन के साथ संबंधों को सामान्य बनाने की कोशिश की, और सीमा विवाद के समाधान के बारे में एक समझौते पर हस्ताक्षर किए। उनके कार्यकाल के दौरान भारत-अमरीका संबंधों के बारे में एक नया अध्याय लिखा गया।

इसमें जरा भी संदेह नहीं कि आजादी के बाद वह भारत के महानतम वक्ताओं में रहे। वह शब्दों से खेल सकते थे लेकिन बहुत नाप-तोलकर बोलते थे। वह लेखक थे। वह कभी भी अनुचित काम करने के लोभ में नहीं पड़े। उन्होंने सामाजिक सौहार्द के सद्गुण को महसूस किया। एक बड़े राष्ट्रीय हित के लिए पार्टी से ऊपर उठने की उनकी क्षमता महत्वपूर्ण रही।

आज, हम उनका 90वां जन्मदिन 'सुशासन दिवस' के रूप में मना रहे हैं, हम उनके स्वस्थ और दीर्घ जीवन की कामना करते हैं। ■

(लेखक केन्द्रीय रक्षा एवं सूचना प्रसारण मंत्री हैं)

मन की बात

मिलकर चलाएं 'ड्रग्स मुक्त भारत' अभियान : नरेंद्र मोदी

आकाशवाणी पर 'मन की बात' कार्यक्रम के जरिए 14 दिसंबर 2014 को प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने देश की जनता के साथ अपने 'मन की बात' साझा की। इस बार मुद्दा था युवाओं में नशे की बढ़ती लत। श्री मोदी ने चिंता जताते हुए कहा कि नशे के कारण युवा पीढ़ी अधंकार में फंसती जा रही है। उन्होंने कहा कि नशे के इस दलदल से युवाओं को बाहर निकालने के लिए उसके परिवार, समाज और सरकार को मिलकर कदम उठाने होंगे। हम यहां उनके भाषण का संपादित पाठ प्रकाशित कर रहे हैं:

मैं ने पिछली बार कहा था कि लम्बे अरसे से मुझे हमारी युवा पीढ़ी की चिंता हो रही है। चिंता इसलिए नहीं हो रही है कि आपने मुझे प्रधानमंत्री बनाया है, चिंता इसलिए हो रही है कि किसी मां का लाल, किसी परिवार का बेटा या बेटी ऐसे दलदल में फंस जाते हैं तो उस व्यक्ति का नहीं, वो पूरा परिवार तबाह हो जाता है। समाज, देश सब कुछ बरबाद हो जाता है। ड्रग्स, नशा ऐसी भंयकर बीमारी है, ऐसी भंयकर बुराई है जो अच्छों अच्छों को हिला देती है।

मैं जब गुजरात में मुख्यमंत्री के रूप में काम करता था, तो कई बार मुझे हमारे अच्छे-अच्छे अफसर मिलने आते थे, छुट्टी मांगते थे। तो मैं पूछता था कि क्यों? पहले तो नहीं बोलते थे, लेकिन जरा प्यार से बात करता था तो बताते थे कि बेटा बुरी चीज में फंसा है। उसको बाहर निकालने के लिए ये सब छोड़-छाड़ कर, मुझे उस के साथ रहना पड़ेगा। और मैंने देखा था कि जिनको मैं बहुत बहादुर अच्छे अफसर मानता था, वे भी सिर्फ रोना ही बाकी रह जाता था। मैंनें ऐसी कई माताएं देखी हैं।

मैं एक बार पंजाब में गया था तो वहां माताएं मुझे मिली थी। बहुत गुस्सा भी कर रही थी, बहुत पीड़ा व्यक्त कर रही थीं।

हमें इसकी चिंता समाज के रूप में करनी होगी। और मैं जानता हूँ कि बालक जो इस बुराई में फंसता है तो कभी कभी हम उस बालक को दोषी मानते हैं। बालक को बुरा मानते हैं। हकीकत ये है कि नशा बुरा है। बालक बुरा नहीं है, नशे की लत बुरी है। बालक बुरा नहीं है हम अपने बालक को बुरा न माने। आदत को बुरा मानें, नशे को बुरा मानें और उससे दूर रखने के रास्ते खोजें। बालक को ही दुत्कार देंगे तो वो और नशा करने लग जाएगा। ये अपने आप में एक Psycho&-Socio&Medical problem है। और उसको हमें Psycho&Socio&-Medical problem के रूप में ही treat करना पड़ेगा। उसी के रूप में handle करना पड़ेगा और मैं मानता हूँ कि कुछ समस्याओं का समाधान मेडिकल से परे है। व्यक्ति स्वयं, परिवार, यार-दोस्त, समाज, सरकार, कानून, सब को मिल कर के एक दिशा में काम करना पड़ेगा। ये टुकड़ों में करने से समस्या का समाधान नहीं होना है।

मैंने अभी असम में डी0जी0पी0 की Conference रखी थी। मैंने उनके सामने मेरी इस पीड़ा को आक्रोश के साथ व्यक्त किया था। मैंने पुलिस डिपार्टमेंट में इसकी गम्भीर बहस करने के लिये, उपाय खोजने के लिए कहा

है। मैंने डिपार्टमेंट को भी कहा है कि क्यों नहीं हम एक टोल-फ्री हैल्पलाईन शुरू करें। ताकि देश के किसी भी कोने में, जिस मां-बाप को ये मुसीबत है कि उनके बेटे में उनको ये लग रहा है कि ड्रग की दुनिया में फंसा है, एक तो उनको दुनिया को कहने में शर्म भी आती है, संकोच भी होता है, कहां कहें? एक हैल्पलाईन बनाने के लिए मैंने शासन को कहा है। वो बहुत ही जल्द उस दिशा में जरूर सोचेंगे और कुछ करेंगे।

उसी प्रकार से, मैं जानता हूँ ड्रग्स तीन बातों को लाता है और मैं उसको कहूँगा, ये बुराइयों वाला Three D है - मनोरंजन के Three D की बात मैं नहीं कर रहा हूँ।

एक D है Darkness, दूसरा D है Destruction और तीसरा D है Devastation.

नशा अंधेरी गली में ले जाता है। विनाश के मोड़ पर आकर खड़ा कर देता है और बर्बादी का मंजर इसके सिवाय नशे में कुछ नहीं होता है। इसलिये इस बहुत ही चिंता के विषय पर मैंने चर्चा की है।

जब मैंने पिछले 'मन की बात' कार्यक्रम में इस बात का स्पर्श किया था, देश भर से करीब सात हजार से ज्यादा चिट्ठियां मुझे आकाशवाणी के पते पर आई। सरकार में जो चिट्ठियां आई वो अलग। ऑनलाइन, सरकारी पोर्टल पर, MyGov-in पोर्टल पर, हजारों ई-मेल आए। ट्विटर, फेसबुक पर शायद, लाखों कमेन्ट्स आये हैं। एक प्रकार से समाज के मन में पड़ी हुई बात, एक साथ बाहर आना शुरू हुआ है।

मैं विशेषकर, देश के मीडिया का भी आभारी हूँ कि इस बात को उन्होंने आगे बढ़ाया। कई टी. वी. ने विशेष

ड्रग्स तीन बातों को लाता है और मैं उसको कहूँगा, ये बुराइयों वाला Three D है - मनोरंजन के Three D की बात मैं नहीं कर रहा हूँ।

एक D है Darkness, दूसरा D है Destruction और तीसरा D है Devastation.

एक-एक घंटे के कार्यक्रम किये हैं और मैंने देखा, उसमें सिर्फ सरकार की बुराइयों का ही कार्यक्रम नहीं था, एक चिन्ता थी और मैं मानता हूं, एक प्रकार से समस्या से बाहर निकलने की जद्दोजहद थी और उसके कारण एक अच्छा विचार-विमर्श का तो माहौल शुरू हुआ है। सरकार के जिम्मे जो बाते हैं, वो भी Sensitised हुई हैं। उनको लगता है अब वे उदासीन नहीं रह सकते हैं।

मैं कभी-कभी, नशे में डूबे हुए उन नौजवानों से पूछना चाहता हूँ कि क्या कभी आपने सोचा है आपको दो घंटे, चार घंटे नशे की लत में शायद एक अलग जिन्दगी जीने का अहसास होता होगा।

परेशानियों से मुक्ति का अहसास होता होगा, लेकिन क्या कभी आपने सोचा है कि जिन पैसों से आप ड्रग्स खरीदते हो वो पैसे कहां जाते हैं? आपने कभी सोचा है? कल्पना कीजिये! यही ड्रग्स के पैसे अगर आतंकवादियों के पास जाते होंगे! इन्हीं पैसों से आतंकवादी अगर शस्त्र खरीदते होंगे! और उन्हीं शस्त्रों से कोई आतंकवादी मेरे देश के जवान के सीने में गोलियां दाग देता होगा! मेरे देश का जवान शहीद हो जाता होगा! तो क्या कभी सोचा है आपने? किसी मां के लाल को मारने वाला, भारत मां के प्राण प्रिय, देश के लिए जीने-मरने वाले, सैनिक के सीने में गोली लगी है, कहीं ऐसा तो नहीं है न? उस गोली में कहीं न कहीं तुम्हारी नशे की आदत का पैसा भी है, एक बार सोचिये और जब आप इस बात को सोचेंगे, मैं विश्वास से कहता हूँ, आप भी तो भारत माता को प्रेम करते हैं, आप भी तो देश के सैनिकों को सम्मान करते हैं, तो फिर आप आतंकवादियों को मदद करने वाले, ड्रग-माफिया को मदद करने वाले, इस कारोबार को मदद कैसे कर सकते हैं।

कुछ लोगों को ऐसा लगता है कि जब जीवन में निराशा आ जाती है, विफलता आ जाती है, जीवन में जब कोई रास्ता नहीं सूझता, तब आदमी नशे की लत में पड़ जाता है। मुझे तो ऐसा लगता है कि जिसके जीवन में कोई ध्येय नहीं है, लक्ष्य नहीं है, उंचे इरादे नहीं हैं, एक वैक्यूम है, वहां पर ड्रग का प्रवेश करना सरल हो जाता है।

ड्रग से अगर बचना है, अपने बच्चे को बचाना है तो उनको ध्येयवादी बनाइये, कुछ करने के इरादे वाले बनाइये, सपने देखने वाले बनाइये। आप देखिये, फिर उनका बाकी चीजों की तरफ मन नही लगेगा। उसको लगेगा नहीं, मुझे करना है।

कभी-कभी यार दोस्तों के बीच रहते हैं तो लगता है ये बड़ा Cool है। कुछ लोगों को लगता है कि ये Style statement है और इसी मन की स्थिति में कभी- कभी पता न रहते हुए ही, ऐसी गम्भीर बीमारी में ही फंस जाते हैं। न ये Style statement है और न ये

Cool है। हकीकत में तो ये बरबादी का मंजर है और इसलिए हम सब के हृदय से अपने साथियों को जब नशे के गौरव गान होते हो, अब अपने अपने मजे की बातें बताते हो, तालियां बजाते हो, तब 'No' कहने की हिम्मत कीजिए, reject करने की हिम्मत कीजिए, इतना ही नही, उनको भी ये गलत कर रहे हो, अनुचित कर रहे हो ये कहने की आप हिम्मत जताइए।

मैं माता- पिता से भी कहना चाहता हूँ। हमारे पास आज कल समय नहीं हैं दौड़ रहे हैं। जिंदगी का गुजारा करने के लिए दौड़ना पड़ रहा है। अपने जीवन को और अच्छा बनाने के लिये दौड़ना पड़ रहा है। लेकिन इस दौड़ के बीच में भी, अपने बच्चों के लिये हमारे पास समय है क्या?

क्या कभी हमने देखा है कि हम ज्यादातर अपने बच्चों के साथ उनकी लौकिक प्रगति की ही चर्चा करते हैं? कितने अंक लाया, क्या नहीं खाना है? या कभी कहाँ जाना है? कहां नहीं जाना है, हमारी बातों का दायरा इतना सीमित है। या कभी उसके हृदय के भीतर जाकर के अपने बच्चों को अपने पास खोलने के लिये हमने अवसर दिया है? आप ये जरूर कीजिये। अगर बच्चे आपके साथ खुलेंगे तो वहां क्या चल रहा है पता चलेगा।

बच्चे में बुरी आदत अचानक नहीं आती है, धीरे-धीरे शुरू होती है और जैसे-जैसे बुराई शुरू होती है तो घर में उसका बदलाव भी शुरू होता है। उस बदलाव को बारीकी से देखना चाहिये। उस बदलाव को अगर बारीकी से देखेंगे तो मुझे विश्वास है कि आप बिल्कुल beginning में ही अपने बालक को बचा लेंगे। ■

अटल जी और मालवीय जी को 'भारत रत्न'

24 दिसम्बर को केन्द्रीय सरकार ने पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी और स्वतंत्रता सेनानी मदन मोहन मालवीय को देश के सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार 'भारत रत्न' से सुशोभित करने की घोषणा की। भारत के राष्ट्रपति श्री प्रणब मुखर्जी ने एक उद्घोषणा में कहा कि मुझे पं. मदनमोहन मालवीय (मरणोपरांत) और श्री अटल बिहारी वाजपेयी को ''भारत रत्न'' प्रदान करते हुए अत्यंत हर्ष है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने भी विकास पर अपने विचार अभिव्यक्त किए और ट्विटर पर अटल बिहारी वाजपेयी की एक पुरानी तस्वीर को दिखाया।

उन्होंने ट्विटर पर कहा कि 'अटलजी, प्रत्येक व्यक्ति के लिए बहुत कुछ महत्व रखते हैं। वह एक मार्गदर्शक हैं, प्रेरक हैं और बड़े से बड़े महान पुरुष के लिए महान युग-पुरुष हैं। भारत के लिए उनका योगदान अमूल्य है। ''पं. मदन मोहन मालवीय को एक महान विद्वान एवं स्वतंत्रता सेनानी के रूप में स्मरण किया जाता रहेगा, जिसने लोगों के बीच राष्ट्रीय चेतना की ज्वाला फूंकी।'' श्री मोदी ने एक और ट्वीट में अपने यह विचार रखें।

श्री लालकृष्ण आडवाणी ने कहा कि ''श्री अटल बिहारी वाजपेयी सचमुच इस पुरूस्कार को पाने के हकदार हैं क्योंकि उन्होंने प्रधानमंत्री के रूप में अपने शासनकाल में जरा भी दाग लगने नहीं दिया।''

इससे पूर्व मंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में केन्द्रीय मंत्रिमंडल ने भाजपा के वरिष्ठ नेता वाजपेयीजी और स्वतंत्रता सेनानी तथा शिक्षाविद् मदन मोहन मालवीय के नामों को राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी के पास भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान की सिफारिश की। अनेक राजनीतिज्ञों ने अटल बिहारी वाजपेयी तथा मदन मोहन मालवीय को ''भारत रत्न'' प्रदान करने के निर्णय का स्वागत किया।

भाजपा संसदीय बोर्ड ने भारत के महान सपूतों, स्वतंत्रता सेनानी और महान राष्ट्रवादी पं. मदन मोहन मालवीय और पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी को भारत सरकार के सर्वोच्च नागरिक पुरूस्कार ''भारत रत्न'' देने के ऐतिहासिक निर्णय का स्वागत करते हुए कहा है कि ''सरकार के निर्णय से न केवल लाखों-करोड़ों भारतवासियों की इच्छा का सम्मान किया है बल्कि इन दो महानायकों के प्रति सभी देशवासियों के मन में बसी भावनाओं के सम्मान की भी अभिव्यक्ति हुई है। इन दोनों महामनाओं को उनके अपूर्व योगदान तथा भारत के लोगों के प्रति निश्चित प्रतिबद्धता को हमारा नमन!'' ■

अटलजी का प्रथम अध्यक्षीय भाषण : भाग - 2

अंधेरा छंटेगा, सूरज निकलेगा, कमल खिलेगा

- अटल बिहारी वाजपेयी

देश 25 दिसम्बर 2014 को अटलजी का 90वां जन्मदिवस भव्य तरीके से मना चुका है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के आह्वान पर उनके जन्म दिवस 25 दिसम्बर को 'सुशासन दिवस' के रूप में पूरे देश में मनाया गया। अटल जी 6 अप्रैल 1980 को भारतीय जनता पार्टी की स्थापना के समय प्रथम अध्यक्ष बने थे। बम्बई (अब मुम्बई) में आयोजित राष्ट्रीय परिषद (28-30 दिसम्बर 1980) में अटल जी के अध्यक्षीय भाषण ने कार्यकर्ताओं में नई स्फूर्ति को जागृत किया। यह सचमुच एक ऐतिहासिक भाषण था।

गतांक से हम उनके भाषण को कमल संदेश के सुधी पाठकों के लिए श्रृंखलाबद्ध प्रकाशित कर रहे हैं। प्रस्तुत है दूसरा भाग:-

मानव मूल्यों के ह्रास के कारण शोषण

मनुष्य द्वारा मनुष्य का शोषण मानवीय मूल्यों के विकास का परिणाम नहीं है। वास्तव में आर्थिक-सामाजिक व्यवस्थाओं की प्रगति के किसी दौर में तथा उस समय सक्रिय भौतिक शक्तियों के कारण मूल्यों का जो ह्रास हुआ, यह उसका परिणाम है। गांधी जी का समाजवाद इस बात पर बल देता है कि शोषणरहित समाज की रचना किसी मूल्यविहीन तथा वैज्ञानिक कही जाने वाली व्यवस्था का विकास जरूरी है, जिस पर सामाजिक परिवर्तन का ढांचा खड़ा किया जा सके तथा जिसे कसौटी बनाकर उस ढांचे की उपयोगिता को भी परखा जा सके।

मार्क्सवादी यह नहीं बता पाते कि पूंजीवाद की समाप्ति के बाद क्या होगा, सिवाय इसके कि वे एक वर्गविहीन समाज की रचना करेंगे। किंतु व्यवहार में तो उलटा ही दिखाई देता है। उनकी व्यवस्था एक क्रूर तथा अधिनायकवादी व्यवस्था में बदल जाती है, जिसमें सभी मानवीय मूल्य स्वाहा हो जाते हैं।

भौतिक आधार और वैज्ञानिक विधियां

मार्क्सवादी अथवा कथित वैज्ञानिक समाजवाद के हामी बहुधा गांधी जी को विज्ञान विरोधी बताते हैं। वास्तविकता यह है कि वे जीवन भर सत्य की खोज में लगे रहे और विज्ञान भी सत्य की खोज का दावा करता है। किंतु वैज्ञानिक विधियों से मनुष्य अपने भीतर के सत्य को नहीं पा सकता, आत्म-साक्षात्कार नहीं कर सकता। भौतिक यथार्थ का पता लगाने के लिए विज्ञान तथा वैज्ञानिक विधियां उपयुक्त हैं। किंतु उनसे मनुष्य के मन की गहराई और उसकी विशालता को नहीं मापा जा सकता। गांधी जी का समाजवाद भौतिक और आध्यात्मिक दोनों तरह की वास्तविकता पर बल देता है और सत्य को देखने की ऐसी समग्र दृष्टि ही मानवीय मूल्यों का ज्ञान कराती है।

मार्क्सवादी यह नहीं बता पाते कि पूंजीवाद की समाप्ति के बाद क्या होगा, सिवाय इसके कि वे एक वर्गविहीन समाज की रचना करेंगे। किंतु व्यवहार में तो उलटा ही दिखाई देता है। उनकी व्यवस्था एक क्रूर तथा अधिनायकवादी व्यवस्था में बदल जाती है, जिसमें सभी मानवीय मूल्य स्वाहा हो जाते हैं।

हिंसा का विरोध

मार्क्सवादी और गांधीवादी के बीच हिंसा के प्रश्न पर भी मौलिक अंतर है। सभी कम्युनिस्ट क्रांतियां हिंसा के बल पर ही हुई हैं और खेद का विषय है कि वह अपने लोगों के विरुद्ध हिंसा को अपना कर ही खुद को बचा सकी है। मार्क्सवादी क्रांति अपने ही बच्चों को अपना भक्ष्य बनाती है। गांधी जी हर

परिस्थिति में हिंसा का उपयोग करने के विरोधी नहीं थे, किंतु उन्होंने चेतावनी दी थी कि यदि भारत में सामाजिक परिवर्तन अथवा वर्ग संघर्ष की समस्या को सुलझाने के लिए हिंसा को हथियार बनाया गया तो अन्तोगत्वा असफलता ही मिलेगी।

सत्ता का वितरण

गांधी और मार्क्स के बीच सत्ता के वितरण के प्रश्न पर भी, जिससे हिंसा की समस्या जुड़ी हुई है, गहरा मतभेद है। मार्क्सवादी समाजवाद का राज्य अथवा राजसत्ता के वितरण के बारे में कोई स्वतंत्र या मौलिक विचार नहीं हैं। यही कारण है कि मार्क्सवादी लोकतंत्र में विश्वास नहीं करते। गांधी जी ने मार्क्स की भांति राज्य के तिरोहित होने की बात तो कही, किंतु उन्होंने राज्य के हाथों में असीम अधिकार केन्द्रित करने के विरुद्ध चेतावनी दी। गांधीवादी और मार्क्सवाद में एक मूल मतभेद इस बात पर भी हैं कि राज्य के तिरोधान का मार्ग और उसकी प्रक्रिया क्या होगी। कम्युनिस्ट देशों में राज्य सर्वसत्ता संपन्न हो गया है और वह अपनी शक्ति का उपयोग श्रमजीवी वर्ग के खिलाफ ही कर रहा है। पोलैंड की हाल की घटनाएं इसका उदाहरण हैं।

भारतीय जनता पार्टी इसी व्यापक एवं सकारात्मक धर्मनिरपेक्षता को स्वीकार करती है। भारतीय पृष्ठभूमि में धर्मनिरपेक्ष राज्य व्यवस्था स्थापित करने का उद्देश्य तभी पूर्ण हुआ कहा जा सकता है जबकि धर्म, जाति भाषा एवं क्षेत्र की सीमाओं के ऊपर उठकर भारतीयता की भावना को, जो मेरे विचार से हमारे सभी देशवासियों में मूल रूप में विद्यमान है, विकसित एवं दृढ़ करने में हम सफल हों।

विकेन्द्रीकरण

गांधीवादी समाजवाद विकेन्द्रीकरण को राज्य व्यवस्था का आधार बनाता है। इसमें राजनीतिक संस्थाओं और प्रक्रियाओं की दो धाराएं होंगी, जो एक दूसरे के समानांतर चलेंगी। एक धारा प्रातिनिधिक लोकतंत्र की होगी और दूसरी भागीदारी पर आधारित लोकतंत्र की आज भारत में केन्द्र में संसद और प्रदेशों में विधानसभाओं के नीचे लोकतंत्र नदारद है। सारी शक्ति नौकरीशाही के हाथों में केन्द्रित है। इस अवस्था में न तो लोगों को नव-निर्माण के प्रयत्न में जुटाया जा सकता है और न अपनी तकदीर का फैसला आप करने के कार्य में भागीदारी बनाया जा सकता है। पंचायतों और जिला परिषदों को वास्तविक शक्ति और वित्तीय संसाधन देने चाहिए। इनकी स्वायत्तता राज्य सरकार की कृपा पर निर्भर न रहकर संविधान द्वारा प्रदत्त हो।

ये तथा अन्य स्थानीय संस्थाएं न केवल अपने सदस्यों की तथा एक दूसरे की सहायता करेंगी प्रत्युत ऊपर की इकाई से भी जुड़ी रहेगी। अधिनायकवादी प्रवृत्तियों तथा रवैय्यों पर अंकुश रखने में इन संस्थाओं की, जिन्हें गांधीजी स्थानीय गणतंत्र कहते थे, महत्वपूर्ण भूमिका होगी।

विकेन्द्रीकृत अर्थव्यवस्था

गांधीवादी समाजवाद आर्थिक शक्ति के एकाधिकार का भी पूर्ण विरोधी है, जबकि कम्युनिस्ट देशों में समाजवाद आर्थिक शक्ति पर राज्य के एकाधिकार का पर्यायवाची बन गया है। राजनीतिक शक्ति के साथ आर्थिक शक्ति का केन्द्रीकरण दमन और आतंक पर आधारित शासन व्यवस्था का निर्माण करता है, जो मूलत: समाजवादी मान्यताओं के सर्वथा विरुद्ध है। आर्थिक सत्ता के राज्य में या कुछ मुट्ठी भर लोगों में केन्द्रित होने से रोकने के लिए हमें विकेन्द्रित अर्थव्यवस्था का अवलंबन करना होगा। साम्यवाद और पूंजीवाद दोनों ही एक नयी प्रकार की विषमता, अमानवीयता, हिंसा, स्वार्थ, लोभ, अनियंत्रित उपभोगवाद तथा अन्यताभाव (एलीनेशन) जैसी बुराइयों को जन्म देते हैं। गांधीजी का न्यासिता अथवा 'ट्रस्टीशिप' का सिद्धांत संसार को तीसरा रास्ता दिखा सकता है। 'ट्रस्टीशिप' का विचार पूंजीवाद और साम्यवाद दोनों के अच्छे तत्त्व ले सकता है और बुरे तत्त्वों को छोड़ सकता है। यदि समाज को उत्पादक, उपभोक्ता, राज्य, पूंजी तथा श्रम सभी के हितों में सामंजस्य बिठाना है और उनको एक संयुक्त प्रयास में भागीदारी बनाना है तो 'ट्रस्टीशिप' के अलावा और कोई रास्ता नहीं है।

गांधीजी के 'ट्रस्टीशिप' के विचार की विवेचना करते समय हमें यह समझना है कि यह केवल सत्ताधारियों की भलमनसाहत पर आधारित नहीं है। इसका सही महत्व संस्थागत् परिवर्तन तथा संगठित जनशक्ति की भूमिका की पृष्ठभूमि में समझा जा सकता है।

यह खेद का विषय है कि 'ट्रस्टीशिप' के सिद्धांत को अमल में लाने की ओर हमारे देश में पर्याप्त ध्यान नहीं दिया गया जबकि ब्रिटेन जैसे कुछ अन्य देश इस दिशा में प्रयोग कर रहे हैं।

यदि भारत 1947 में ही गांधीजी के रास्ते पर चलने का फैसला करता तो आज हम अपने को जिस संकट में पाते हैं, शायद हमें उसका सामना न करना पड़ता। 33 वर्षों के आर्थिक नियोजन और विकास के बाद भी गरीबी बढ़ रही है, विषमता में वृद्धि हो रही है और बेरोजगारी की समस्या ने एक विस्फोटक

रूप धारण कर लिया है। भारत की प्रवृत्ति और प्रतिभा के अनुरूप और अपने भौतिक और मानवीय साधनों को ध्यान में रखकर यदि हम विकास का स्वदेशी ढांचा अपनाते तो आज पश्चिमी पूंजीवाद और सोवियत नियोजन की बुराइयों से ग्रस्त इस दयनीय दशा में न होते।

तीसरा विकल्प

सच्चाई यह है कि पूंजीवाद और साम्यवाद दोनों जुड़वा भाई हैं। एक समानता को समाप्त करता है, दूसरा स्वतंत्रता को और दोनों ही बंधुत्व को मिटाते हैं। पूंजीवाद और साम्यवाद दोनों ही अपनी चमत्कारिक उपलब्धियों के बावजूद आज अवनति की ओर बढ़ रहे हैं। साम्यवादी देशों अधिकाधिक विषमता जन्म ले रही है। पूंजीवादी देशों में स्वतंत्रता को और अधिक सीमित करने के प्रयास चल रहे हैं। विश्व को एक तीसरे विकल्प की खोज है। पूंजीवाद और साम्यवाद दोनों को ऐसी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है, जिनका उत्तर इन व्यवस्थाओं के पास नहीं है।

राष्ट्रीय सीमाओं के बाहर भी पूंजीवादी और मार्क्सवादी प्रणालियों में कोई विशेष अंतर नहीं दिखाई देता। पूंजीवादी देशों की तुलना में साम्यवादी देश कुछ कम विस्तारवादी सिद्ध नहीं हुए हैं। भारतीय जनता पार्टी गांधीवादी समाजवाद को तीसरे विकल्प के रूप में स्वीकृत कराने के लिए एक राष्ट्रीय अभियान संगठित करेगी।

सकारात्मक धर्मनिरपेक्षता

प्राचीन काल से चली आ रही अपने देश की परंपरा के अनुरूप हम धर्मनिरपेक्षता के आदर्श से प्रतिबद्ध हैं। धर्मतंत्रीय राज्य हमारी परंपरा के प्रतिकूल है। एक 'सद्विप्रा बहुधा वदन्ति' में अभिव्यक्त मान्यता हमारी जीवन-दृष्टि का एक मूलभूत तत्त्व रही है। राज्य ने विभिन्न धर्मों के अनुयायियों के बीच भेदभाव नहीं किया। सर्वधर्म समभाव की उस मनोवृत्ति का ही परिणाम था। कि 1947 में जब हम स्वतंत्र हुए तब, यद्यपि उस समय देश भीषण धार्मिक उन्माद से ग्रस्त था, हमने ऐसी राज्य-व्यवस्था स्थापित करने का निश्चय किया जिसमें सभी धर्मों के अनुयायियों का स्थान बराबर हो। नागरिकों में न कोई प्रथम श्रेणी का हो, न कोई द्वितीय श्रेणी का।

लोकतंत्र के प्रति वचनबद्धता

लोकतंत्र तथा धर्मनिरपेक्षता अविभाज्य हैं। जो राज्य व्यवस्था विभिन्न मतावलम्बियों में भेदभाव करे, उन्हें बराबरी का स्थान न दे, उसे वास्तव में लोकतंत्र नहीं कहा जा सकता, क्योंकि लोकतंत्र जिन मूलभूत मान्यताओं पर आधारित है, उनमें सभी नागरिकों की समता का सिद्धांत भी है। लोकतंत्र से हमारी प्रतिबद्धता उतनी ही मूलभूत है जितनी धर्मनिरपेक्षता से।

वास्तव में धर्म-निरपेक्षता की धारणा कहीं अधिक व्यापक एवं सकारात्मक है। धर्मनिरपेक्षता किस प्रकार लोकतंत्र से जुड़ी है इसका उल्लेख किया जा चुका है।

इस अधिवेशन में उपस्थित लोगों में हजारों ऐसे हैं, जिन्होंने 1975-76 में लोकतंत्र पर आए अभूतपूर्व संकट को साहस के साथ सामना किया और हर तरह के कष्ट झेले। हमारे कुछ साथी तो उस संग्रह में वीरगति को प्राप्त हुए। आज हम उनको केवल अपनी विनम्र श्रद्धांजलि ही अर्पित कर सकते हैं।

विकृत धर्मनिरपेक्षता

यह खेद का विषय है कि कांग्रेस की नीतियों ने धर्मनिरपेक्षता की धारणा का स्वरूप विकृत कर दिया। राजनीतिक कारणों से धर्मनिरपेक्षता का अर्थ केवल अल्पसंख्यक मतावलंबियों के हितों की सुरक्षा मान लिया गया, यद्यपि यह धर्मनिरपेक्षता संप्रदायों तथा वर्गों के संकीर्ण स्वार्थों के तुष्टिकरण का एक सम्मानजनक रूप धारण कर लेती है।

धर्मनिरपेक्षता की सकारात्मक धारणा

वास्तव में धर्म-निरपेक्षता की धारणा कहीं अधिक व्यापक एवं सकारात्मक है। धर्मनिरपेक्षता किस प्रकार लोकतंत्र से जुड़ी है इसका उल्लेख किया जा चुका है। धर्मनिरपेक्षता राष्ट्रीयता तथा राष्ट्रीय एकात्मकता की भी आश्वस्ति है।

भारतीय जनता पार्टी इसी व्यापक एवं सकारात्मक धर्मनिरपेक्षता को स्वीकार करती है। भारतीय पृष्ठभूमि में धर्मनिरपेक्ष राज्य व्यवस्था स्थापित करने का उद्देश्य तभी पूर्ण हुआ कहा जा सकता है जबकि धर्म, जाति भाषा एवं क्षेत्र की सीमाओं के ऊपर उठकर भारतीयता की भावना को, जो मेरे विचार से हमारे सभी देशवासियों में मूल रूप में विद्यमान है, विकसित एवं दृढ़ करने में हम सफल हों। "भारतीयता" का आधार वह मूल्य-व्यवस्था ही हो सकती है जो भारतीय सभ्यता का अंग है और इस मूल्य-व्यवस्था का विकास विभिन्न धर्मों, विचारधारणाओं एवं अनुभवों से प्राप्त मूल्यों के समन्वय से होता रहा है। हमें सतत इस दिशा में प्रयत्नशील रहना चाहिए कि समन्वय की यह प्रक्रिया आगे बढ़ती रहे। भारतीयों को अच्छे इंसान बनाने के हेतु हमें सभी धर्मों के सद्विचारों का उपयोग करना चाहिए।

क्रमशः...

पुस्तक विमोचन : 'हमारे अटलजी'

अगर बैलेंस शीट तैयार करें तो अटल सबसे बेहतर प्रधानमंत्री : आडवाणी

पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी के 90वें जन्मदिन पर श्री लालकृष्ण आडवाणी ने भाजपा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष एवं कमल संदेश के संपादक श्री प्रभात झा द्वारा संपादित 'हमारे अटल जी' नामक पुस्तक का विमोचन किया।

पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी के 90वें जन्मदिन पर आयोजित पुस्तक लोकार्पण समारोह में भाजपा के वरिष्ठ नेता श्री लालकृष्ण आडवाणी ने कहा कि अगर देश के अब तक के प्रधानमंत्रियों की बैलेंस सीट तैयार की जाय, तो अटल जी सबसे बेहतर प्रधानमंत्री साबित होंगे। उनके प्रधानमंत्रित्व काल में किसी भी दृष्टि से देश का नुकसान नहीं हुआ।

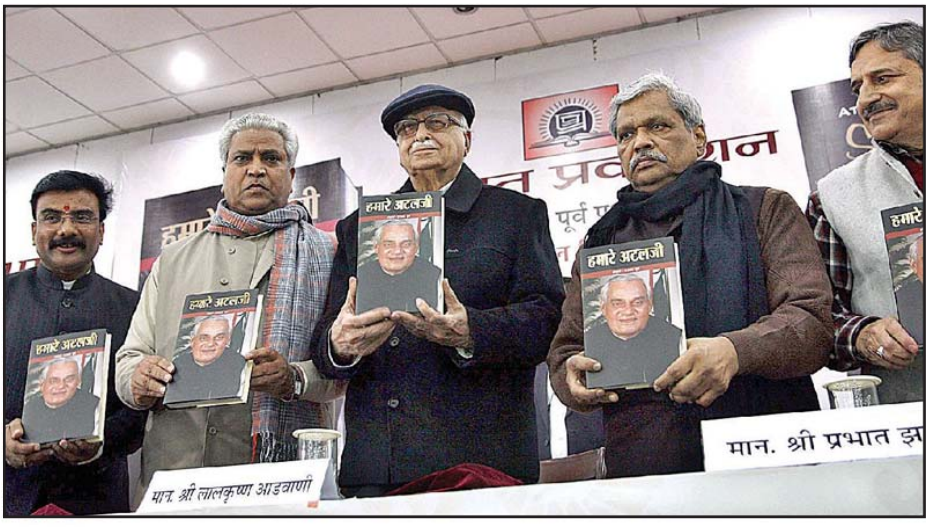

उन्होंने कहा कि अभी तक के प्रधानमंत्रियों में टॉप तीन प्रधानमंत्रियों नंबर वन अटल बिहारी वाजपेयी, दूसरे पर नेहरू और तीसरे पर इंदिरा गांधी का नाम आता है। उसके बाद अन्य प्रधानमंत्रियों का नबंर आता है।

अटल जी का जिक्र करते हुए श्री आडवाणी ने कहा कि वे ऐसे विराट व्यक्तित्व थे कि जब मेरा कार्यक्षेत्र सिंध व राजस्थान तक सीमित था तो यही सोचा करता था कि अगर बन सकूं तो इनके जैसा बन सकूं।

एक बार जब वह राजस्थान प्रवास पर गए तो मुझे एक सप्ताह तक उनके साथ रहने को कहा गया। एक सप्ताह के अनुभव पर ही यह सोचने लगा कि मैंने अपना रोल मॉडल गलत चुन लिया। यह इसलिए कि अटल जी का अनुभव, व्यापक ज्ञान, समझ, संक्षिप्त शब्दों में बड़ी बात कह देने की क्षमता आदि के कारण मैं असहज महसूस करने लगा। जब लंबा सफर तय किया तो इस निर्णय पर पंहुचा कि उनसे सीखा जा सकता है।

उन्होंने कहा कि अटल वहीं हैं जिन्होंने पोखरण विस्फोट के बाद अमेरिका व अन्य पश्चिमी राष्ट्रों को यह संकेत दिया था कि इंडिया उस राष्ट्र का नाम है जो घास खाकर भी जिंदा रह सकता है।

प्रभात जी ने जो काम किया है वो प्रशंसनीय है, क्योंकि मैं सोच रहा था कि इसमें उन्होंने केवल अटल जी के बारे में लिखा है, परंतु इस पुस्तक में अटल जी के साथ विभिन्न अवसरों पर समय गुजारने वाले लोगों के अनुभव भी हैं, जो एक अच्छा प्रयास है। इसने उनका व्यक्तित्व कई रूपों में उभरकर सामने आया है।

वहीं भाजपा के संगठन मंत्री श्री रामलाल ने कहा कि अटल जी थे ही ऐसे व्यक्तित्व कि वह जहां भी जाते वहां का माहौल ही बदल जाता था। वह अभाव व प्रभाव दोनों में समानार्थी थे।

पुस्तक विमोचन के अवसर पर श्री प्रभात झा ने कहा कि उनकी नजर में अटल जी के जीवन वृत्त लिखने से ज्यादा महत्वपूर्ण संस्मरण लिखना होता है, क्योंकि इससे अनछुए पहलू से लेकर सभी तरह के आद्योपांत उसमें आ जाता है।

मैंने ये काम इसलिए किया है कि कोई रहे या न रहे पुस्तक की कभी मृत्यु नहीं होती।

कार्यक्रम का संचालन प्रभात प्रकाशन के श्री प्रभात कुमार ने किया।■